साप्ताहिक

समय माया

पृथ्वी पर हम सब समय माया के यात्री हैं

पंजीयन क्रमांक RNINDPM\HIN\16730/12/1/97/TC

प्रधान संपादक-अजमेरा एस.पी.कुमार
B.COM., M.A., LLB, CAIIB, DLLLW&PM

Tel : 91-731-2102725
Cell : 9300755803
Fax : 91-731-2531630
Websites : www.corruption2india.com
www.geocities.com/ corruption2india/eduIndore.html
www.geocities.com/corruption2india/corruptindia.html
www.geocities.com/corruption2india/corruptMP.html
E-mail : mwc@indiatimes.com
: linkdage@hotmail.com,
: linkadage@indiatimes.com

(c) all copyrights reserved with chief editor.

वर्ष 7 अंक 16 इन्दौर, जबलपुर सोमवार, 11 से 17 जुलाई 2005 पृष्ठ 8 मूल्य रु.2/-

2
■ सभी जांच एजेंसियां आकंठ भ्रष्ट
■ मु.का.अ.जि.पं. और सरपंचों की लूट

3
■ एग्रीमेंट के पहले काम शुरू
■ ईएसआई भ्रष्ट संचालक भ्रमित कर रहा

4
■ आदि. जिलों के आ.जा.क. सहा आयुक्त व अन्य मचाये हैं भारी लूट
■ खाद्य विभाग भ्रष्टों का जमावड़ा

5
■ स्कूली शिक्षा में कदम-कदम भ्रष्टाचार का तांडव

7
■ प्रदूषण जन्य मुसीबतों को खुला आमंत्रण
■ हॉकर को लात दिखाई पेपर छीन

8
■ टीवी कार्यक्रम परोस रहे बदतमीजियां, हिंसा, यौनाचार
■ भ्रष्टाचार के धन से फिल्म

हिमाचल में बाढ़ चीनी षड्यंत्र

भारतीय सीमा में 6 चीनी शव-चीन ने परीक्षण से जाना भारत में तबाही का असर

हिमाचल में सतलुज में उफान से आयी भयानक बाढ़ चीनी षच्यंत्र और भारत में विनाश का कारण बनी। उसने गत वर्ष भी कहा था वहां बाढ़ आ सकती है।

सन 2002 में पारछू झील का जो गड्ढा बना था वह तिब्बत में था जिसे भू-स्खलन नाम दिया गया। वह गड्ढा जानबूझकर चीन ने बम विस्फोट से बनाया। दूसरा वहां भारी वर्षा हुई नहीं, तीसरा ग्लेशियस पिघलने की कहानी प्राकृतिक रूप से 15 मई से 10 जून तक होनी चाहिए थी जब दक्षिणी एशिया का तापमान उच्चतम बिंदु पर पहुंचता है।

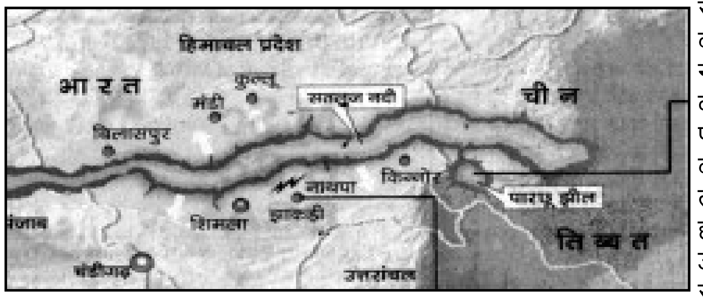

बमों के विस्फोटों से गर्मी उत्पन्न कर बर्फ पिघला कर पारधू झील के गड्ढे में पानी इकट्ठा कर उसका मुंह भारत की तरफ मोड़ दिया गया। परिणाम स्वरूप पूरा हिमाचल बाढ़ की लपेट में आ गया। नाथपा झाकड़ी पन बिजली घर की 1500 मे. वा. विद्युत उत्पादन की 6 इकाइयां बंद हो गईं, जिससे पंजाब, हिमाचल, दिल्ली, हरियाणा, चंडीगढ़ को बिजली आपूर्ति में बाधा बनी। चीन का ये परीक्षण सफल रहा अर्थात वो बिना सेना भेजे भी हिमालय के बर्फ को पिघला कर उत्तरी भारत में तबाही पैदा कर सकता है भविष्य में।

चीन जो हमारा पड़ोसी शत्रु राष्ट्र है, उसे भारत की उन्नति, प्रतिस्पर्धा कभी नहीं पची। एक बार प्रत्यक्ष आक्रमण कर 62000 वर्ग मील हिस्सा दबा लिया तो दबा लिया फिर दोस्ती का हाथ दोस्ती के लिये नहीं दुश्मनी निकालने, तबाही मचाने, बर्बादी करने औद्योगिक और व्यावसायिक राज जानने के लिये बढ़ाया हमारे भ्रष्टों के मुंह में पानी आया कि शायद कोई फायदा हमें प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से मिल सके या मिल जाये।

दूसरा तिब्बत पर हमारी शत्रुता उससे वर्षों पुरानी है और प्रत्यक्ष है हमारा दलाईलामा को तिब्बत की स्वतंत्रता को प्रत्यक्ष सहयोग भी उसके कष्टों का मुख्य कारण रहा है। इसके साथ दलाई लामा का भारत के धर्मशाला में निवास कर रहा है। गाहे-बगाहे कभी वो तो कभी हमारे राजनेता टिप्पणी करते रहते हैं।

वर्तमान में अंतर्राष्ट्रीय बाजार में चीनी उत्पादों जिसमें साफ्ट वेयर, कंप्यूटर तैयार वस्त्रों, औषधियों, वैद्युतकीय उपकरणों, स्वचलित वाहनों लगभग वर्तमान युग की लोगों की आवश्यकता की वस्तुओं के बाजार में मात्रा और गुणवत्ता के क्षेत्र में भारत की वस्तुओं से कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना और नाता देखना पड़ता है। कभी उसे तो कभी हमें, जो उसकी स्थायी शत्रुता का कारण है। लाख हम मित्रता की बातें करे परन्तु एक म्यान में दो तलवारें सांप, नेवले की मित्रता नहीं निभ सकती वाली स्थिति है। चूंकि भारत में भ्रष्ट लोकतांत्रिक व्यवस्था, सरकार में राजनैतिक दलों में हर नेता सत्ताधीश मंत्री आते ही साथ चारों तरफ से जनता को शासन में एकत्रित लोकनिधि नोंच कर देशी-विदेशी बैंक खातों में जमा कर पूरी बैंकिंग प्रणाली को चलाने में व्यस्त रहते हैं। स्वाभाविक है सत्ता पाते ही सारे ऐश्वर्य को भोगना धन एकत्रित करना भविष्य के लिये अपनी जमावट करना प्रथम प्राथमिकता होती है इसके लिये वो सारे कुकर्मों जिसमें विदेशी षड्यंत्रों में लिप्त होकर राष्ट्र हितों को विस्मारित करते हैं। (**शेष प्रष्ट 2**)

अमेरिका का नया हथियार-पेट्रोल

विश्व की जनता को अब अच्छी तरह समझ आ गया होगा कि उसने ईराक पर कब्जा क्यों किया परमाणु बमों की अफवाह फैलाकर अब परिणाम सामने है। जब उसने पेट्रो क्रूड की 25-30 डालर प्रति बैरल की कीमतों को 45-50 पर खड़ा कर दिया और दुनिया के मीडिया को हथियार बना कर 100 डालर से ऊपर पहुंचाने की धमकी दे रहा है। ये है धन बांटने और लूट का खेल।

अमेरिका पूरे विश्व के संकर प्रजाति मानवों का देश है। संकर प्रजाति जन्म से ही भारी धूर्त, मक्कार और जालसाज और भोगी प्रवृत्ति की होती है। अमेरिका का हर नागरिक इसका ज्वलंत प्रमाण है।

> संकर प्रजाति के अमेरिका की दरियादिली और गुंडागर्दी विश्व के नागरिकों को समझ में आने लगी है। लोकतंत्र में सत्ताधीश ज्यादा मक्कार, कुकर्मी, झूठे, फरेबी और भ्रष्ट होते हैं। उन्हें अपनी अय्याशी और विदेशी बैंकों में ऋण लेकर, भीख मांगकर, स्वाभिमान और राष्ट्र बेचने से भी परहेज नहीं होता वो मृत आत्माओं के जीवित गिद्ध होते हैं जो जनता को दिखाते हैं उनका कल्याण पर जुटे रहते हैं स्व कल्याण में, की नीति को सर्वोपरि मानकर एक तरफ अमेरिका सहायता देता है चवन्नी दी तो वसूलता है रुपया। पेट्रोल की कीमतें भी उसी का अंश है। ईराक पर कब्जा कर अब वह वही कर रहा है। विश्व के सबसे बड़े तेल उत्पादक पर कब्जा जमाकर तेल की कीमतों में अनाप-शनाप वृद्धि कर वह उस सहायता को दोनों हाथ से वसूल कर लेना चाहता है जो वो विश्व के देशों को भीख में बांटता फिरता है। जैसे परमाणु विस्फोटों से बर्बादी के बाद सुनामी सहायता के नाम पर बांटी।

वो एक तरफ सहायता बांटने का ढोंग करता है एक हाथ से, तो सैंकड़ों हाथों से वसूली करता है। यदि अमेरिकी सरकार अपने नागरिकों पर भी खर्च करती है तो षड्यंत्रों की रचना के माध्यम से विश्व में वशूली की जाती है। जैसे अमेरिकी स्कूलों की लड़कियां भारी अय्याश प्रकृति की होती हैं। स्वाभाविक था संभोग के परिणाम स्वरूप वहां अधिकांश 10-12-13 वर्ष की लड़कियों की गोद में बच्चे पाये जाते हैं। अनावश्यक गर्भ धारण रोकने के लिए उसने स्कूलों में कंडोम बांटे और विश्व में एड्स का भय फैलाकर 10 पै. के कंडोम को रु. 10 में बेचकर उसे मुप्त कंडोम की वसूली दुनिया भर से की।

इसी प्रकार ईराक युद्ध में परमाणु बमों की अफवाह फैलाकर आक्रमण कर वहां के तेल कुओं पर कब्जा कर लिया जब उसके पास विश्व के 50% से ज्यादा

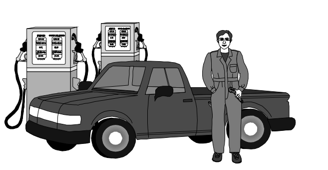

तेल स्त्रोत हाथ में आ गये तो अब अनाप-शनाप तेल की कीमतों में वृद्धि कर रहा है।

दुनिया भर के मीडिया को अपने कब्जे में कर अब दहशत फैला रहा है अमेरिका। 100 प्रति बैरल का पेट्रो क्रूड बेचने की ये उसकी रणनीति का हिस्सा है जिसमें वो अपना आर्थिक साम्राज्य स्थापित कर विश्व के विकासशील राष्ट्रों जिसमें भारत, चीन, जैसे विशाल राष्ट्रों से लेकर अर्द्ध विकसित, आर्थिक और प्राकृतिक स्त्रोतों से कमजोर राष्ट्रों में अपनी आर्थिक, सामरिक, सत्ता स्थापित कर सके। कमजोर राष्ट्रों, अर्द्धविकसित, अविकसित राष्ट्रों की अर्थ व्यवस्था को तेल आयात के कारण भारी वित्तीय संसाधनों को झोंकना पड़ेगा फिर उन्हें ये तेल के रूप में ऋण देकर अपनी शर्तें मनवायेगा अपनी बहुराष्ट्रीय कंपनियों को वहां ठेके और बाजार देकर कब्जे करेगा।

26 दिस. 2004 को इंडोनेशिया, जर्काता, सुमात्रा के पास किये परमाणु विस्फोटों के स्वरूप आये भयानक बाढ़, भूकंप जिसे अमेरिका ने सुनामी का नाम दिया था। हमारी करप्शान की वेबसाइटों ने दुनिया को तत्काल बाद इसकी पोल खोलकर बता दिया था कि ये परमाणु विस्फोटों के कारण हुआ है, जिसके परिणाम स्वरूप इसने अरबों डालर की सहायता देनी पड़ी थी। श्रीलंका, बाग्लादेश, सुमात्रा, थाईलैंड, इंडोनेशिया जैसे अनेकों देशों जो इससे प्रभावित हुए थे मरने वालों की संख्या करोड़ों में थी। इस राक्षस ने परमाणु परीक्षण कर यह देख लिया कि कितने शक्ति के परमाणु बमों के विस्फोटों से क्या और कितना हो सकता है। इन अमेरिकी धूर्तों ने जो सहायता वहां दी थी उसे ही ये गिद्ध पेट्रोलियम पदार्थों की कीमतें बढ़ाकर वसूल रहे हैं। जहां तक भारत शासन में बैठे कांग्रेसी गिद्धों और षड्यंत्रकारी नेताओं और मंत्रियों का सवाल है तो वो तो इस राष्ट्र को अमेरिकी सरकार कंपनियों से पैसा लेकर पूरा भी बेच दें, गिरवी कर दें सब थोड़ा है।

उ.प्र. के ब्यौड़े मुल्ला मुलायम सिंग की अयोध्या में आतंकियों का आतंक

आतंकियों ने कैसे मंदिर परिसर में घुसकर गोलियां बरसा दी

उ.प्र. में सपा की ब्यौड़े मुल्ला मुलायम सिंह के प्रशासन में पूरे उ.प्र. में सपा के गुड़ों की वसूली का खुला तांडव चल रहा है, अपराधियों की चेती हुई है। प्रशासन गहरे तक वसूली में व्यस्त है सरकारी काम काज बिना वसूली और भ्रष्टाचार के नहीं चल रहा है। जब शासन में बैठे मंत्री मुख्यमंत्री और पार्टी के गुंड़े ही वसूली में व्यस्त हो पुलिस उन्हें संरक्षण दे रही हो तो प्रदेश के हालात समझे जा सकते हैं। मिडिया के भ्रष्टों को तो गले तक भर दो फिर सब चुप।

इसी का परिणाम था, 4 जुलाई को अयोध्या में मंदिर परिसर में 6 आतंक वादियों ने घुसकर रामलला मंदिर तक ग्रेनेड फेंके गोलियां चलाई जबकि केन्द्रीय

सरकार ने मई में ही इस आशय की गोपनीय जानकारिया प्रदेश सरकार को भेज दी थी। इसके उपरांत भी ब्यौड़े मुल्ला मुलायम का नशा उतरा नहीं दूसरा मुख्य मंत्री भले ही मुलायम सिंग होकर सरकार तो अमर सिंग सोलंकी के इंशारे पर चलती हैं. उसे अपने व्यावसाय और वसूली से फुर्सत मिले तो जनता की सुरक्षा मंदिर की सुरक्षा देखे। ऐसा ही नहीं वरन उ.प्र. के अधिकांश जिलों में आईएसआई के आंतवादियों ने अपना जाल बिछा रखा है। जो पाकिस्तान से इंटरनेट के माध्मय से सूचनाओं का बेरोकटोक आदान प्रदान और दिशा निर्देश प्राप्त करते रहते है। अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति हेनरी किसिंजर की भारत की पूर्व प्रधान मंत्री एवं इंदिरा गांधी की पाकिस्तान से पूर्वी पाकिस्तान को अलग कर बांगला देश बनाने पर की गयी टिप्पणी ने पाकिस्तान के रुढ़िवादियों के जख्म हर कर दिए। (**शेष पृष्ठ 3 पर**)

मिशन डीप इंपेक्ट- अंतरिक्ष में युद्ध का पहला चरण

भविष्य में अंतरिक्ष में उपग्रहों को नष्ट करने का षड्यंत्र

अमेरिका की हर चाल और खेल के पीछे की चाल समझना बहुत जरूरी है। क्या जरूरत थी या है कि अंतरिक्ष में घूमते हुए उल्टा पिंड को नष्ट किया जाये। धरती पर तो उसके ही देश में 11 सित. 2000 को हुए षड्यंत्र के तहत वर्ल्ड ट्रेड सेंटर को उड़ाया गया वह तो समझ और देख नहीं पाया। अंतरिक्ष में करोड़ों मील दूर की उड़ती उल्का को फोड़ने चले या अंतरिक्ष में दूसरे देशों के सूचना तकनीकी, जासूसी उपग्रहों को फोड़ने और अंतरिक्ष युद्ध का परीक्षण था ये।

वास्तविकता में नासा के इस कार्यक्रम से दुनिया को ये बता दिया गया है कि भविष्य में वो अंतरिक्ष में

घूमते किसी भी कृत्रिम उपग्रह को फोड़ कर सारी सूचना तकनीकी के, जासूसी, टीवी रिफ्लेक्टर्स को ऐसे ही फोड़ देगा. उसके फोटो जारी करने, नियंत्रण करने और बताने के पीछे यही मंशा थी। यदि दूसरे देशों, शत्रु देशों, मित्र देशों, किसी के भी यदि ऐसे उपग्रह अंतरिक्ष में घूम रहे हैं, जो उसके हितों में बाधा बन रहे हैं उसके व्यापारिक और सामरिक संस्थानों पर निगाह रखते हैं या उसकी नहीं सुनते हैं या नहीं मानते हैं उनके उपग्रहों को वो ऐसे ही अंतरिक्ष में फोड़ कर चूरा कर देगा। अब आवश्यकता उसको जवाब देने की है। अन्यथा भविष्य में किसी देश के ऐसे उपग्रहों को फोड़ कर वहां की सूक्ष्म तरंग तकनीकी से जुड़ी मोबाइल फोन सेवा, टेलीफोन सेवा, इंटरनेट, दूरदर्शन, टेलीकासिंग, ब्राड कास्टिंग, मौसम आदि की पूर्व सूचना को नष्ट कर देगा। ताकि पूरी सूचना तंत्र व्यवस्था से जुड़ी अर्थव्यवस्था नष्ट हो जाये।

संपादकीय

स्वाभिमान हीन गुलामों, भ्रष्टों की फौज है सरकार

राष्ट्र के शीर्ष पर बैठी गुलामों, भ्रष्टों, स्वाभिमानहीनों की फौज जब अपनी रक्षा नहीं कर सकती तो पड़ोसी हेलीकाप्टर उतारे, हिमाचल में बाढ़ निर्मित करे, कश्मीर में आतंकवाद फैलाये, जवानों को मारे, कौन बोलेगा? हमारी फौजें हमारे ही देश में आतंकवादियों को घेर भी लें तो उनको उल्टा ही बिरयानी खिलानी पड़े, वहां सर्वोच्च न्यायालय ही हमें मानवाधिकार दिखाये तो उन्हें हम रसद पहुंचाये। ये है कानून और सरकारें।हमारे राजनीतिज्ञ, सरकारें, अमेरिका और ब्रिटेन के ऋण पर पले वो आंख उठाकर भी देख लें तो ये भिखारी मिमियायेंगें ही वो कहें ईरान से पाइप लाइन नहीं लेना तो ये स्वीकार कर लें।बांग्लादेश की फौजें हमारे सैनिकों को मार डाले। अपने हेलिकाप्टर हमारी सीमा में उतारे तो हमारे भ्रष्टों को इतनी फुर्सत भी नहीं कि उनके राजदूतों को बुलाकर पूछताछ भी कर सकें।नेपाल, हिमालय की तराई में बसा देश अपने गृह युद्ध से सुलझ नहीं पा रहा। हम पर नियम थोपता है तो भी हमारे राजनीतिज्ञों की औकात जो सरकार में बैठे हैं कि उससे पूछताछ कर सकें।तिब्बत में जब पारछू झील बनी तो भारतीय वैज्ञानिकों को जाने नहीं दिया, फिर पिछले वर्ष जब उसने कहा कि पारछू से भारत में तबाही आ सकती है जब भी भ्रष्टों की नींद नहीं खुली। दूसरी तरफ ये भिखारी जो 110 करोड़ की आबादी के मुखिया हैं। चूंकि स्वयं भ्रष्ट हैं तो जनता को क्या सीख देंगे। अन्यथा इनका अगर स्वाभिमान जाग जाये तो पूरी दुनिया को अपने कदमों मे झुका सकते हैं।संकर प्रजाति का अमेरिका 26 करोड़ की आबादी का देश दुनिया के 60% साधनों का उपयोग करता है और कागज के डालर छाप कर दुनिया को भीख बाटता है। दुनिया पर दादागिरी करता है और हमारी सरकार के भ्रष्ट राजनीतिज्ञ उसके सामने मिमियाते हैं। फिर इन्हीं राजनीतिज्ञों को बुलाता है, नंगा करता है। तमाचा जड़ता है और हम आशीर्वाद मानते हैं। आखिर 3000 वर्ष के गुलामों का स्वाभिमान हो तो जागो फिर जब सरकार ही इटालियन गोरी चमड़ी के हाथ में हो तो उसकी बला से कि कश्मीर, पंजाब में आतंकवाद फिर सिर उठाने लगा है। चीन, बंगला देश और नेपाल जैसे अतिक्रमण कर रहे हैं। हम उनके बात करने का रास्ता देख रहे हैं। सोच रहे हैं। बात करेंगे वो आराम से परीक्षण कर रहे हैं बाढ़ ला रहे हैं। 10000 कि.मी. दूर बैठकर सुनामी हा रहे हैं। करोड़ों निपटा रहे हैं। हमारे भ्रष्ट सत्ता के सुख का आनंद उठा रहे हैं। इसलिये इनके जासूसी सूचना तकनीकी उपग्रह भी आंख मूंदे अंतरिक्ष में आराम फरमा रहे हैं। जबकि हमारे वैज्ञानिक रक्षा वैज्ञानिक उन चित्रों का बारीकी से निगरानी करें भारत के पश्चिमी से लेकर सुदूर उत्तरी पूर्वी और पूर्वी पड़ोसी जो वास्तव में शत्रु हैं कि हर सूक्ष्मतम हरकतों पर न केवल नजरें रखे और हर बदतमीजी का सटीक जवाब दिया जा सकता है। पर ये सब जब संभव है जब राष्ट्र का हर नागरिक अपने मताधिकार का सदुपयोग कर राष्ट्र प्रेमी स्वाभिमानी को अपनी सत्ता में बैठाये। जहां सत्तायें ब्यौड़ों द्वारा चुन कर बैठायी जाती है तो स्वाभाविक है सत्ता में बैठने वाला तो राष्ट्र बेचकर, ऋण लेकर अपने बैंक बैलेंस बढ़ायेगा। उसकी बला से कोई बाढ़ लाये, आतंकवाद फैलाये देश में सेनायें घुसेड़े, कोई सुनामी लाये वो आंख मूंद अपनी जेबें भरेगा और चल देगा।

चीनी षड्यंत्र

(प्रथम पृष्ट का शेष)

सत्ता देशी विदेशका भी आकंलन, प्राथमिकता से करता है।

चीन में 1955 से लेकर अभी तक हर वक्त भारत के इन गुलामों, भ्रष्टों, सत्ताधीशों का आंकलन कर ही हर चाल चली है। स्वाभाविक है उसने हर कमजोरी का मोटा फायदा उठाया और हर कदम पर तगड़ी चोट दी है। हिमाचल की बाढ़ भी उसी का परिणाम है। उसने पूर्व नियोजित षड्यंत्र से तिब्बत की सीमा में 220 हेक्टेयर का गड्ढा बनाया, ग्लेशियरों का पानी इकट्ठा किया उसका पर्याप्त आंकलन किया जब मौसम ठंडा होने लगा, बारिश की शुरुआत में अपने षड्यंत्र को सफल बनाया उसे अच्छी चरह से ज्ञात है कि 3000 वर्षों की ये भ्रष्ट नपुसंक कौम उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ लेगी। हमने, हमारे वैज्ञानिकों ने सत्ताधीशों ने उसके षड्यंत्र को आंख मूंद कर न केवल स्वीकार किया और पूरे हिमालय में बाढ़ की तबाही देखी, कहां गई इटालियन गौरांगी, बस बाढ़ पर गुलामों की मौत पर, घड़ियाली आंसू रूपी शब्दों के फूल चढ़ा दिये। कहां गये गृह मंत्री, रक्षा मंत्री, विदेश मंत्री इन सबके सरगना प्रधान मंत्री।

ओह बड़ी मुश्किल से सत्ता सुंदरी हाथ आई है। प्रणय लीला करे या बाढ़ की तबाही में उसे कोप भवन में जाने दें, कुछ नहीं ये भी उन भ्रष्ट, अय्याश, निकम्मे राजाओं और नवाबों से ज्यादा नहीं कि पहले हम सत्ता भोगें दिल्ली में बैठकर हिमालय की बाढ़, कस्मीर के आतंकवादी, बंगलादेशी सेना ने सीमा पर तबाही मचाई, सैनिक मारे दिल्ली तक नहीं पहुंचे हैं।दूसरी तरफ हिमालयीन ग्लेशियरों जिनका जल भारतीय नदियों में प्रवाहित होता है चीन उन्हें एक आसान हथियार के रूप में भविष्य में उपयोग कर पूरे उत्तरी भारत को तहस-नहस करने और तबाही मचाने में करेगा। कल्पना करें कि एक 200 टी.एन.टी. का परमाणु बम का विस्फोट करें तो 300 मी. गहरे में हिमालय से निकलने वाली सभी नदियों में 100-200 फुट जल स्तर बढ़ा दिया जाये तो वे सभी महानगर जलमग्न हो जायेंगे जो नदियों किनारे बसे हैं। सारा अर्थ तंत्र, उद्योग, पन बिजली घर, सड़कें, लगभग 200 शहर, 10000 गांव सब साफ जिसका असर दिल्ली, आगरा, इलाहाबाद से लेकर पटना तक पड़ सकता है। यदि हमारे सत्ताधीश नहीं जागे तो ये सब भी संभव है।

सीबीआई, राज्यों के आर्थिक अपराध और लोकायुक्त ही सबूतों में करते हैं हेराफेरी

सभी जांच एजेंसियां आकंठ भ्रष्ट

पूरे राष्ट्र में भ्रष्टाचार, जालसाजियां, अपराधों को रोकने के लिये राष्ट्र की भारत सरकार के केन्द्रीय गृह मंत्रालय और राज्यों के गृह मंत्रालयों के अंतर्गत कार्यरत पुलिस भ्रष्ट, निकम्मी और अपराधियों को पकड़ने और अपराधों को रोकने की अपेक्षा संरक्षण देकर अपराध करवाने में ही अपनी अहं भूमिका अदा कर वसूली में जुटी है। यह कटु सत्य केन्द्रीय और राज्यों के गृह मंत्रालय को अच्छी तरह मालूम है। इसलिये ही केन्द्र नें केन्द्रीय जांच ब्यूरो और राज्यों में आर्थिक अन्वेषण व लोकायुक्त की स्थापना की गई। पर दुर्भाग्य यह था कि इसमें भी वही पुलिसिया भ्रष्ट प्रतिनियुक्ति पर बुला कर रखे जाते हैं। स्वाभाविक है ये अपराधियों, भ्रष्टों से धन डकार कर उनके विरुद्ध ठोस जांच और सबूतों के अभाव या कमजोर सबूतों के कारण बचा लेते हैं। उनको बचाने में पहला तो भ्रष्ट अधिकारी, इंजीनियर्स, डाक्यर्स, अपने शासकीय कार्यों में हेराफेरी, जालसाजी, भ्रष्टाचार करके धन कमाता है तो पहले ही वह हर कदम पुख्ता व्यवस्था करके चलता है, अर्थात अपने ऊपर के अधिकारी, संचालक, आयुक्त, सचिव से लेकर मंत्री, मुख्यमंत्री को भी धन बांटता चलता है ताकि उसके विरुद्ध कोई कार्यवाही न हो सके, दूसरा एकत्रित वसूले धन से मकान, दुकान, जमीनें या अन्य कहीं विनियोजन भी करता है तो अपने नाम से नहीं, इसके बाद भी यदि भारी भ्रष्टाचार की शिकायतें होती भी हैं तो हैं लोकायुक्त, आर्थिक अन्वेषण ब्यूरो पत्रकारों को भी धन लुटाता चलता है ताकि उसके विरुद्ध कहीं भी हो-हल्ला न मचे। इसके बाद

भ्रष्ट आरोपियों से धन डकार बचाती हैं जांच एजेंसियां

भी यदि लोकायुक्त और आर्थिक अन्वेषण ब्यूरो के पास शिकायतें पहुंचती ही जायें तो वो कार्यवाही करने से पूर्व ही हर स्तर पर सौदेबाजी कर शिकायतें दबा कर भ्रष्टों को बचाने की पुरजोर कोशिश करता है। इस पर भी बात नहीं बनती तो ही छापे का कार्यवाही की जाती है। पर समझदार भ्रष्ट तब भी मुस्कराता रहता है। एक तो छापे के समय ही लेन-देन हो जाता है अगर पकड़ा जाता है रु. 5 करोड़ की संपत्ति, धन, स्वर्ण, जेवरात तो जिसके हाथ पड़ता है या जो अच्छा लगता है रख लेता है। इससे दो फायदे होते हैं छापा मारने वाला पाकर खुश, जिसके यहां छापा पड़ा वो रखते देखकर ज्यादा खुश क्योंकि रखने वाला ज्यादा मुंह नहीं चलायेगा, दूसरा उतनी रकम का कम हिसाब किताब में आयेगा यह बात हर छापों में होती है चाहे विक्रय कर, आबकारी, एक्साइज कस्टम, नारकोटिक्स से लेकर सीबीआई, लोकायुक्त, आर्थिक अन्वेषण ब्यूरो कोई भी हो। एक बार छापे में वाणिज्यिक कर के अधिकारियों ने एक व्यवसायी के संस्थानों पर छापा मारा उसके यहां चारों ओर वीडियो कैमरे लगे थे, उसमें इंदौर के वाणिज्यिक कर अधिकारी ओ.पी. पांडेय को छापे में से माल जेब में रखते हुए वीडियोग्राफी कर ली थी फिर सीबीआई लोकायुक्त, आर्थिक अन्वेषण ब्यूरो में तो प्रति नियुक्ति पर आये सभी निर्देशक, एसपी, डीएसपी से लेकर टीआई, उपनिरीक्षक, सहायक निरीक्षक और साधारण कांस्टेबल तक चूंकि भ्रष्टाचार के, वसूली, लूट खसोट और अपराधों आदि के बदनामी के कारण ही लाइन अटैच किये जाते हैं। ये भूखे, निकम्मों, भ्रष्ट श्वानों की फौज वहां पर मुश्किल से ही काम करती है और मानती है कि वह कालापानी की सजा भुगत रहे हैं। इसलिये जो भी इनके लपेटे में आया है अगर रु. 5 हजार खर्च कर देता है तो न केवल वो यह मालूम कर लेता है कि क्या और किस स्तर की कार्यवाही चल रही है। स्वाभाविक है वो रुपये खर्च करके वर्षों बाद तक आरोपी ही नहीं बन पाता क्योंकि सारे आरोपों को पहले ही धन खर्च करके कमजोर कर चुका होता है।

हाल ही जून के अंतिम सप्ताह केबिनेट स्तर की सभा में जिसकी अध्यक्षता स्वयं सदियों से भ्रष्ट भूखे गौर ही मुख्यमंत्री के रूप में कर रहे थे, जिसमें लोकायुक्त और राज्य आर्थिक अन्वेषण जैसी भ्रष्ट एजेंसियों ने 9 अधिकारियों के विरुद्ध विभागीय जांच के लिये कहा था। लोक स्वास्थ्य यांत्रिकीय के भ्रष्ट मुख्य अभियंता एस.एस. श्रीवास्तव ने प्रदेश के बाहर निजी यात्रा की और बाद में इन यात्राओं को सरकारी बता कर धन लिया आरोप सिद्ध नहीं हो सका और मुक्त हो गये. ऐसे ही लोक निर्माण विभाग के मुख्य अभियंता एनएम पुरुषवानी और सेवा निवृत्त मु.अ. एस.एल. यादव पर भी सबूतों के अभाव में मामला खत्म कर दिया गया। ऐसे जबलपुर के मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी के विरुद्ध शासकीय खरीदी में भ्रष्टाचार के आरोप थे जो सिद्ध नहीं हो पाये वो भी समाप्त कर दिये गये। सागर के नेत्र डॉ. पी.के. गोदरे जो स्वर्ग सिधार चुके हैं। प्रदूषण नियंत्रण मंडल के सदस्य सचिव जी.डी. अग्रवाल पर कंप्यूटर खरीदी में घोटाले किये व एक उद्योग को अधिकार क्षेत्र से बाहर जाकर अनापत्ति प्रमाण पत्र दिये। सिंगरौली के तात्कालीन भू अर्जन अधिकारी वीरेन्द्र सिंह लो.स्वा. यां. के अभियंता एमयू फरीदी, लो.नि.वि.के का. अभि. आर.सी. शर्मा के विरुद्ध भी आरोपों में कमजोर साक्ष्यों के अभाव में बरी कर दिये गये।जब सबको बरी ही करना था तो क्यों इन हरामखोरों के वेतन भत्तों पर करोड़ों रुपये जनता के धम केखर्च किये गये।

लोकायुक्त रिपुसुदन दयाल तो सेवा निवृत्ति के बाद लोकायुक्त बने हैं। वो तो जब तक रहंगे जनता के द्वारा शासन को दिये गये धन से पद, शक्ति के अधिकार का सदुपयोग करेंगे और कर रहे हैं। साथ ही जो लपेटे में आ गया है अगर नीचे के अधिकारी और कर्मचारी मेहनत से ठोस तथ्य सबूत जुटा लेंगे तो वो लोकायुक्त के रूप में भ्रष्ट सेवानिवृत्ति न्यायाधीश वसूली करके डकार लेगा। निःसंदेह ये सभी सेवानिवृत्त निहायत ढीले निकम्मे और शासन के धन की बर्बादी करने वाले ही सिद्ध होते हैं।

कुछ रोचक तथ्य पेट्रोल और ऊर्जा के बारे में-

-26 करोड़ अमेरिकी 60 लाख बैरल प्रतिदिन पेट्रोल का उपयोग करते हैं जो भारत और चीन की कुल खपत का दुगुना है।

-इसकी तुलना में 110 करोड़ भारतीय 22 लाख बैरल पेट्रोल प्रतिदिन का ही उपयोग करते हैं।

-दुनिया के पेट्रोल पर कब्जा करके अर्द्ध विकसित, अविकसित, विकासशील और विकसित राष्ट्रों जहां सारी अर्थव्यवस्था आयातित क्रूड पर टिकी है पूरी अर्थव्यवस्था को चौपट कर भिखारी बना देने बाद में कर्जे के रूप में पेट्रोल मनमानी कीमतों पर बेच अपने आधीन बनाने इस प्रकार आधीन किये गये देशों में अमेरिकी कंपनियों को व्यवसाय से लाभ कमाने के लिये बाजार उपलब्ध करवाने की रणनीति।

-भारत को ईरान द्वारा गैस पाइप लाइन पाकिस्तान की धरती से निकालकर आपूर्ति करने से उसकी रणनीति पर सीधा असर पड़ेगा जो उसे तकलीफ दे रहा है। इसलिये ईरान पर परमाणु हथियारों की आड़ में आक्रमण की तैयारी में या साथ ही भारत और पाकिस्तान को धमकाने, व्यापार प्रतिबंध लगाने के भी कुकर्मों से बाज नहीं आ रहा।

-भारत की कच्छ की घाटी से लेकर कोलकत्ता तक लगभग 1400 कि.मी. की समुद्री सीमा गोदावरी का कछार, राजस्थान के मरुस्थल असम और हिमालय की तराई, ब्रह्मपुत्र कछारों में तेल की खुदाई की जाये तो क्रूड पेट्रोलियम का आयातक भारत विश्व में पेट्रोलियम निर्यातक बनने के साथ अगले 100 वर्ष की पेट्रोलियम का आपूर्ति कर सकता है।

-भारत में तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग के भ्रष्ट करोड़ों रु. सरकार का खर्च करके खुदाई करते हैं। गैस और तेल मिल भी जाता है। बाद में घाटे का सौदा कहकर बंद करके रिलायंस पेट्रोलियम के जालसाजों को वहीं कुएं बेचकर अरबों डकार जाते हैं।

-सूर्य की धूप से अगर सस्ती बिजली बनाई जा सकने लगे तो हमें किसी प्रकार के ईंधन की आवश्यकता कहीं नहीं पड़ेगी। महंगी होने और रखने का कारण आम आदमी को बिजली और पेट्रोल का मोहताज बनाकर कमाई करना।

-हमारी भ्रष्ट सरकारें अधिकारी और इंजीनियरों और नेताओं के कारण पवन जल विद्युत ऊर्जा को सही दोहन नहीं कर पा रहे। अन्यथा हम विद्युतोर्जा भी निर्यात कर सकने की क्षमता में हैं।

-विश्व में वर्तमान में पेट्रोल का कंम्ब्यूसन से उपयोग किया जा रहा है। यदि पेट्रोल की एक बूंद का उपयोग परमाणु विखंडन की तकनीक से किया जाये तो मुंबई जैसे शहर के लिये एक दिन के लिये एक बूंद ही काफी है। अर्थात कार्बन के परमाणुओं का विखडंन हाइड्रोजन और हीलियम में परिवर्तित हो जाने से मिलने वाली ऊर्जा।

ग्रामीणों की सुविधा के नाम पर

मु.का.अ.जि.पं. और सरपंचों की लूट

भूख से न मरें , 1 क्वि. गेंहू मुफ्त हर पंचायत को

गांवों में अभावों, रोजगार आदि के कारण किसी गरीब मजदूर, खेतिहर किसान या अन्य किसी की मौत न हो जाये। हर ग्राम पंचायत को हर माह 1 क्विंटल गेहूं मुफ्त दिया जाता है। जिसे किसी भी ग्रामीण, मजदूरों, किसानों, गरीबों को 1 बार में 20 किलो तक सरपंच को देने की छूट होती है, परन्तु पिछले 10 वर्षों से लगातार देखने में ये आ रहा है कि मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत हर जिले पाई जाने वाली औसतन 800 ग्राम पंचायकतों का 800 क्विंटल गेंहू सरपंच और मुख्य कार्यपालन अधिकारी व तहसीलदार मिलकर साल 9 टन 600 क्विंटल ये गेंहू सीधे बाजार में बेचकर सीधे ही डकार जाते हैं, जिसका कोई हिसाब-किताब जन साधारण और ग्रामीणों को नहीं मालूम पड़ पाता। जबकि गांवों में वर्तमान में भी पूरे प्रदेश में अवर्षा और घोर वर्षा के कारण ग्रामीण जन भुखमरी की कगार पर हैं। पर ये सरपंचों, तहसीलदारों, मुख्य कार्यपालन अधिकारियों जिला पंचायतों सब भूखे महाभ्रष्टों की फौज किसी भी ग्रामीण मजदूर लघु एवं सीमांत किसानों, विधवाओं, निःशक्तजनों को कभी एक दाना गेहूं मुफ्त में नहीं देती जहां तक गरीबी रेखा के नीचे का सवाल है तो सरपंच तहसीलदार ऐसे ही लोगों को बी.पी.एल. कार्ड बांटते हैं जो उनके चारों तरफ चक्कर लगाते रहते हैं या चुनावों में जिताते हैं। फिर चाहे वो बड़े किसान हों, उनके रिश्तेदार हों, पक्के मकानों में रहने वाले गाड़ी-घोड़े वाले हों उन्हीं को बांटते हैं। ग्रामीण पाठकों से निवेदन है कि वो गांवों में पंचायतों में मिलने वाली सुविधा को पढ़े, समझें, जानें और उनका पूरा दोहन जन हित में करें, ताकि जनता के धन का दुरुपयोग शक्ति संपन्न, भ्रष्ट, श्वानों की फौज जनता के नाम पर अपने हित में न कर सके।

आरटीओ में 16 का स्थानांतरण

1 आरटीओ 2 एआरटीओ, 13 बाबू, असली भ्रष्ट अभी भी यहीं

इंदौर आरटीओ म.प्र. परिवहन विभाग की आगम आय का सबसे बड़ा संग्रहण केन्द्र रहा है। स्वाभाविक है भ्रष्टाचार, लूट-खसोट, अवैध कारोबार, जाली परमिट, गाड़ियों के हस्तांतरण गाड़ियों के पंजीयन में भी सारे जालसाजी पूर्ण कृत्यों को अंजाम दिया जाता है।

यही कारण है कि एक बार जो आकर यहां बैठ गया लंबे समय तक दोनों हाथों से लूट भ्रष्टाचार का खेल खेलता है। यहां से स्थानांतरण न हो वह हर हथकंडे साम-दाम-दंड भेद का हर पासा फेंक कर जमे रहने की कोशिश में रहता है। इसलिये आरटीी से काले कारनामों भ्रष्टाचार के बारे में समाचार पत्रों में कुछ न छपे सभी बड़े समाचार पत्रों, व जान-पहचान वाले छोटों को भी हर माह लिफापे भिजवाये जाते हैं ताकि उनकी कलम सच न लिखे। **(शेष पृष्ठ 6 पर)**

नर्मदा घाटी विकास प्राधिकरण भ्रष्टाचार

एग्रीमेंट के पहले काम शुरू

बताता है इंजीनियरों और ठेकेदारों का गठजोड़ से भ्रष्टाचार

नर्मदा घाटी विभागीय इंजीनियरों, ठेकेदारों से लेकर मंत्री और मुख्यमंत्री के भ्रष्टाचार और लूट से उनके विकास का प्राधिकरण बन चुका है। इस योजना के शुरुआत करवाने में तात्कालीन महाभ्रष्ट मुख्य मंत्री अर्जुन सिंग से लेकर वर्तमान तक बाबूलाल गौर उनके जल संसाधन और नर्मदा घाटी विकास प्राधिकरण के अध्यक्षों और मंत्री ने इसमें चारों तरफ से धन की बहकती नर्मदा का जी जान से दोहन किया। निःसंदेह अर्जुन, मोती, वोरा, सुनदर, पटवा के बाद दिग्गी दानव, उमा शरारती आये और चले गए बाबू गौर अभी जमे हैं ये भी चले जायेंगे पर वहां बैठे भ्रष्ट इंजीनियरों और ठेकेदारों की फौज पिछले 25 वर्षों से बेखौफ नियोजन, आरेख, रेखांकन, भू-अर्जन, क्षतिपूर्ति, वितरण, कालोनियों के विकास, रखरखाव, कार्य संपादन, निष्पादन में कदम-कदम पर लूट मचाये दोनों हाथों से वर्षों से श्वानों की भांति जुटी है। नोच-खसोट करने में अंदाज इसी बात से लगाया जा सकता है कि निविदा खुलने के बाद, न्यूतम लागत की निविदा का निविदा भरने ाले ठेकेदार के ठहराव की शर्तें निर्धारित होती हैं। कार्यादेश मिलता है फिर ठेकेदार कार्य करने की तैयारी कर कार्य प्रांभ करता है। पर यहां सब उल्टा-पुल्टा चल रहा है। ठेकेदार काम पहले शुरू कर देता है एग्रीमेंट बाद में होता है। इसी प्रकार 21 महीने पहले भुगतान कर दिया गया। बाद में वह कावेली एक्वाडक्ट ढह गई जिसकी 5 माह बाद भी हरामखोर भ्रष्ट मुख्य अभियंता रघुवंशी और कार्यपालन अभियंता व्ही. एन. सोनी ने कोई कार्यवाही क्यों नहीं की? पाठक और भ्रष्ट प्रशासन मंत्री और मुख्यमंत्री भी समझते हैं।

सनावद। इंदिरा सागर नहर के मुख्य अभियंता कार्यालय है जहां रु. 1507 करोड़ के कार्य चल रहे हैं। रु. 750 करोड़ से ज्यादा खर्च हो चुके हैं। यदि इसका तकनीकी अंकेक्षण करवाया जाये तो कुल कार्य रु. 400 सौ करोड़ ज्यादा का नहीं होगा, परन्तु जहां मुख्यमंत्री, न.पा. वि. मंत्री व अध्यक्ष, उपाध्यक्ष से लेकर मुख्य अभियंताओं, अधीक्षण यंत्री के कार्यपालन यंत्री सहायक यंत्रियों से लेकर उपयंत्रियों तक भुखेरे श्वानों की फौज केवल लूटने खाने की ताक में लगी रहती हो, कार्य करने वाले ठेकेदारों करनसिंग, डेव्लपमेंट, सर्विसेज प्रा. लि., गिरीराज अर्थमूव्हर्स दोनों ग्वालियर के चंबल के सफेदपोश डकैतों के बारे में पिछले समय माया के अंकों में पढ़ चुके हैं। मैं बी.सी. ब्यानी, भुसावल, जिसके पास वर्तमान में लगभग रु. 125 करोड़ के इंदिरा सागर प्रोजेक्ट में काम कर रहा है, ध्यान सिंग लड़ाराम जबलपुर, मौ. जी.व्ही.आर. श्री निवास राव भी इन कार्यों में ठेकेदारों की हैसियत से कार्यरत हैं।

मे. गायत्री प्रोजेक्ट लि. इस धूर्त ने कावेरी एक्वाडक्ट का निर्माण किया

महाभ्रष्ट मुख्यअभियंता रघुवंशी इंदिरा सागर नहर निर्माण में करोड़ो के घोटालों के मुख्य आरोपी व संरक्षण दाता

भ्रष्ट का.अ. आर्या नहर निर्माण और नर्मदा कालोनी रखरखाव में लाखों का घोटाला

था और इंजीनियरों के साथ मिलकर आर.डी. 24508 कि.मी. पर जो निर्यात कार्य संपन्न किया गया उसमें इतनी घटिया सामग्री का उपयोग किया गया कि वह बनते-बनते ही फरवरी 2005 में ढह गई। इसके कार्यपालन अभियंता धूर्त व्ही.एन. सोनी अधीक्षण यंत्री आर.पी. सक्सेना और मुख्य यंत्री थे रघुवंशी ने इस तीन करोड़ 48 लाख 49 हजार की इस एक्वाडक्ट के निर्माण का रु. दो करोड़ 33 लाख 90 हजार का भुगतान 20 मई 2003 तक ही कर दिया था जबकि इस कार्य को पूर्ण 30 अप्रैल 05 को होना था और यह फरवरी 2005 में पूरी ढह जाने के उपरांत भी मै. गायत्री प्रोजेक्ट लि. हैदराबाद पर अभी तक कोई कार्यवाही नहीं कर सके, क्योंकि घटिया निर्माण सामग्री के उपयोग में सबने बंदरबांट की थी तो कार्यवाही कैसे की जाये और कहां से शुरू की जाये ताकि लूट का राज, राज ही रह सके। समय माया में रिपोर्ट छपने के बाद उपाध्यक्ष रणवीर देखने अवश्य आये थे, परन्तु 7 जून को इंदौर में पलासिया स्थित विश्राम गृह में हमारी कैमरा टीम का सामना करने की अपेक्षा रणवीर, रणछोड़ बने रहे और रघुवंशी 9 बजे कमरे में घुसे तो निकले ही नहीं जब हम 10 बजे रात

भ्रष्ट का.अ. वी.एन सोनी कावेरीऐक्वाडक्ट और नहर निर्माण में करोड़ों का घोटाला

तक वहां जमे रहे तो कहा गया सुबह 9 बजे आइए फिर रणवीर और रघुवंशी सुबह 7 बजे ही इंदौर से भाग निकले। जब रघुवंशी को सनावद जाकर इनके कार्यालय में बात कर साक्षात्कार रिकार्ड करने को कहा तब भी साक्षात्कार देने से मना कर दिया और कहा मैंने गलतियां की हैं। तो मुझे सजा दी जाये पर मैं साक्षात्कार नहीं दूंगा फिर भी पाठकों के लिये जासूसी कैमरे से फोटो पाठकों के लिये ली गई।

इन्हें सूचना का अधिकार अधिनियम 1998 के अंतर्गत पत्र दिये गये थे परन्तु इन भ्रष्टों को जवाब देना संभव ही हुआ। विभागीय इंजीनियर्स और ठेकेदार विभिन्न कारणों की आड़ लेकर जानबूझकर ठेके को निर्धारित अवधि से ज्यादा अवधि में निलंबित करते हैं, ताकि रिजर्व बैंक ऑप इंडिया के त्रैमासिक उपभोक्ता मूल्य सूचकांकों और थोक और औद्योगिक वस्तु मूल्य सूचकांकों में होने वाली वृद्धि का फायदा उठाकर वास्तविक ठेके के कार्य को पूरा करने की लागत में वृद्ध करके वसूली की जा सके। बाद में इंजीनियर्स और ठेकेदार इस लागत वृद्धि में बंदरबांट कर जनता के धन को डकार सकें। अधिकांश ठेके इसलिये विलंब से पूरे किये जाते हैं।

महत्वपूर्ण और जांच का विषय तो ये है जब ठेकेदार को विभाग ने अग्रिम भुगतान ही कर दिया तो लागत वृद्धि का भुगतान क्यों और कैसे?

कार्यों की तरफ ध्यान दें तो मालूम पड़ता है कि एग्रीमेंट या ठहराव बाद में किया गया और कार्यादेश व कार्य पहले शुरू कर दिया गया। अर्थात ठेकेदार और इंजीनियर्स का भ्रष्टाचार और लूट का गठजोड़ बताते हैं कि कार्य कैसे संपन्न हो रहा है।

नर्मदा विकास संभाग नं. 27 सनावद में सीमेंट कांक्रीट लाइनिंग कार्य 205 डब्ल्यू बीबी और इंदिरा सागर की मुख्य नहर का आरडी 31.284 से 41.25कि.मी. सनावद वितरणी का आरडी 15 से 19.545 कि. और लोहारी वितरणी का लघु और उपलघु के ढांचे का निर्माण कार्य 4 जुलाई 03 को प्रारंभ मे. बीसी बिहाणी भुसावल द्वारा रु. 18 करोड़ 22 लाख 59 में किया गया, परन्तु इसका ठहराव क्र. 1/2003-04 का लिखित ठहराव 7 जुहाई 03 को हुआ। इस हिसाब से यह कार्य 7 जुलाई 05 को पूरा हो जाना चाहिये था, परन्तु यह कार्य 31 मई 2005 को मात्र 18% ही हो सका था। अर्थात रु. 18.22 करोड़ 59 हजार की इस ठेका लागत को ढाई वर्ष से ज्यादा विलंब करने से इसका लागत पेट्रोल कीमतें बढ़ने से रु. 35 का पेट्रोल रु. 45 हो गया। 30% लागत की वृद्धि हरामखोर ठेकेदार बीसी ब्यानी और वहां के गिद्धों की फौज जनता के धन से नोच लेगी। ये है षड्यंत्रों से भ्रष्टाचार और वसूली का अड्डा इसलिये 25 वर्षों से दूध देने वाली इस गाय का हर मंत्री मुख्यमंत्री से अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, मुख्य अभियंताओं अधीक्षण अयिंताओं, कार्य पालन अभियंताओं, सहायक अभियंताओं, उपअभियंताओं और ठेकेदारों द्वारा तबियत से दोहन किया जा रहा है। जालसाजियां मुख्य कार्यों के साथ सनावद में नर्मदा कालोनी है उसमें भी 250 क्वार्टस में का. अभियंता आरघ द्वारा भारी भ्रष्टाचार किये गये हैं। रु. 47 लाख में, साथ ही करोड़ों के डाके से लेकर विभागीय वाहनों के डीजल और रखरकाव में भी अभियंताओं से लेकर ड्राइवर तक जिसको जहां मौका मिल रहा है नर्मदा घाटी विकास प्राधिकरण से अधिकारी अभियंता और कर्मचारी अपने विकास में लगे हैं।

कर्मचारी राज्य बीमा सेवा भ्रष्टों का अड्डा (भाग 2)

ईएसआई भ्रष्ट संचालक भ्रमित कर रहा

भ्रष्ट अरोरा ने दैनिक में धन खर्च कर बचने की कोशिश की

कर्मचारी राज्य बीमा सेवा का वर्षों से कुंडली मारे बैठा भ्रष्ट संचालक और उसके भ्रष्टों की फौज जो कदम-कदम नोच-खसोट में जुटी है। एक क्षेत्रीय दैनिक समाचार पत्र में अपनी भ्रष्टाचार की कहानी दबाने और जनता व शासन का ध्यानाकर्षण करने के लिये लाखों रुपये खर्च कर सफाई छपवाई थी इसके विपरीत समय माया वर्षों से इसके भ्रष्टाचार पूर्ण कृत्यों की न केवल निगरानी कर रहा है वरन म.प्र. सूचना का अधिकार अधिनियम 1998 संशोधन 2002 और पूर्व के केन्द्र शासन के सिटिजन चार्टर के अंतर्गत पत्र देकर पिछले 5 वर्षों से जानकारी मांग रहा है। पर भ्रष्टों की इस फौज में संचालक से लेकर अन्य उपसंचालकों के कानों पर भी जूं नहीं रेंगी जिस भस्मक को लेकर इसने भ्रामक समाचार छपवाये थे उसकी कहानी इसके विपरीत कुछ और ही थी वास्तविकता में उस भस्मक में लाखों रुपये की लागत से तैयार किया गया था भारी कमीशन खोरी के कारण वह भस्मक के रूप में प्रयोग ही नहीं किया जा सकता था। दूसरी ओर कचरा जलाने के लिये होस्विन को दिये ठेके में भी भारी कमीशन खोरी की जा रही है।

इंदौर। कर्मचारी राज्य बीमा सेवा के नंदानगर स्थित मुख्यालय में बैठकर संचालक व्ही.के. अरोरा उसका चेला औषधालयों और चिकित्सालयों में बैठे डाक्टर्स किस-किस प्रकार से अवैधानिक और भ्रष्ट कृत्यों में आकंठ लिप्त हैं। कुछ के बारे में तो पाठकों ने गतांकों में पढ़ ही लिया है। इस व अगले अंकों में संचालक डॉ. अरोरा के इसी क्रम से जिस क्रम में इन्होंने विश्व का सबसे बड़े होने का दावा करने वाले दैनिक में लाखों रुपये खर्च करके अपनी सफाई प्रकाशित करवाई थी।

भ्रष्ट संचालक

भ्रष्ट अरोरा ने प्रदूषण निवाररण एवं रोकथाम अधिनियमों 1. जल (प्रदूषण नियंत्रण व निवारण) अधि. 1974, 2. वायु (प्रदूषण नियंत्रण व निवारण) अधिनियम 1981, 3. घातक अवशिष्ट (प्रबंधन व प्रचलन) नियम 1989 की विभिन्न धाराओं के अंतर्गत चिकित्सालयों से निकले अवशिष्टों, जिसमें मानवांगों, गर्भपात से निकले मानव शरीरों, विकसित अविकसित, रक्त, रक्त से सनी पट्टियां, रुई, औधषियां व अन्य पदार्थों को नष्ट करने के लिये अवशिष्टों को नष्ट करने के लिए भस्मक बनाकर जला दिये जाने की व्यवस्था की गई है ताकि वे जमीन में दबाने पर जल स्त्रोतों से मिलकर जल को दूषित न करे, खुले में छोड़ने पर सड़ने से वायु प्रदूषण न फैलायें। पूर्व में इसी प्रधान कार्यालय के पास खुले में फेंके जाते थे। समय माया द्वारा लगातार उन फोटो को छापने और प्रदूषण नियंत्रण मंडल के कारण इन्होंने एक भस्मक का लगभग रु. 10 लाख से ज्यादा में निर्माण करवाया परन्तु प्रदूषण मंडल के नियमों के विपरीत अमानक स्तर का होने के कारण या सत्यता से भारी कमीशन खोरी और वसूली के कारण पिछले तीन वर्षों से जंग खा रहा है। दूसरी तरफ चिकित्सालयों से निकले अवशिष्टों को नष्ट करने के लिये ये और चिकित्सालय अधीक्षक मिलकर बिलों के भुगतान में कमीशन बाजी कर कमाई कर रहे हैं। अपने भ्रष्टाचार और कुकृत्यों को दबाने के लिये बड़े समाचार पत्र में लाखों रुपये खर्च कर सफाई प्रकाशित करवाई गई थी।

केन्द्र के श्रम मंत्रालय जो इस विभाग को कर्मचारियों की चिकित्सा के लिये धन उपलब्ध करवाता है, दूसरा म.प्र. का श्रम मंत्रालय का श्रम विभाग का मुख्यालय मोती बंगला में स्थित है को भस्मक बनवाने और उसके उपयोग में न आने की सच्चाई की जांच करवानी चाहिये कि भ्रष्टाचार कहां और कैसे हुआ। उसे दंडित किया जाये दूसरा स्थापित भस्मक में कहीं निर्माणागत त्रुटि हुई है तो उसे सुधार कर उपयोग में लिया जाये ताकि स्थापित लाखो रुपये का भस्मक कबाड़ा न बन जाये दूसरा जो दैनिक अवशिष्टों के निपटान में धन खर्च किया जा रहा है उसे रोका जा सके। उसके बिलों में वास्तविक खर्च कितना हो रहा है और कितना भुगतान किया जा रहा है इन दोनों भ्रष्टारों की यथा शीघ्र जांच की जाकर भ्रष्ट अरोरा और उसके चेलों को दंडित किया जाये।

साथ ही जो डाक्टर चिकित्सालयों और औषधालयों ने प्रातः और सायंकाल अपनी सेवा पर उपस्थित नहीं होते, अपने स्वयं का निजी व्यवसाय खोल कर कर्त्तव्य स्थल के मुख्यालय को छोड़कर इंदौर व अन्य नगरों से आना-जाना करते हैं। नॉन प्रेक्टिस भत्ता लेकर भी निजी औषधालय चला रहे हैं। उनसे उनके भविष्य निधि खाते से वसूलियां कर पेंशन जब्त कर सेवा मुक्त किया जावे।

अयोध्या मु-ा फिर गर्म

(प्रथम पृष्ठ का शेष) उन्हें भारत और पाकिस्तान के मध्य गहराते मित्रता पूर्ण संबंध उन्हें चुम रहे है। स्वामाविक या जिस आईएसआई लश्करे ए तयबा फिदायीन संगठनों को जो घन खाड़ी के देशों से जकात के रुप में मिल रहा है। तो मांग जेहादी जुनुन के कारण जिससे उनके बैख बैलेस रोजी-रोटी चल रही है उस पर आघात हो रहा है। इसलिए आवश्यक था कि भ्रष्ट कांग्रेसी लुटेरों की केन्द्र सरकार ओर ब्यौड़े मुल्ला मुलायम जैसे भ्रष्टों लुटेरे गि-ों की सारा कमजोरी का फायदा उठाकर वहां आतंकवादी घुसपेठ कर मु- की बुझती आंच को हवा देकर अपनी कमाई के हिस्से का बचाए रखना।

अयोध्या मु-ा फिर गर्म हो गया है। बंद के दौरान इंदौर में विमानतल के एप्रेन में घुसकर विहिप बजरंग दल ने विमान रोककर नए मामले को हवा दे दी है। एरोट्रम टीआई और सीएसपी निलंबित कर दिए है। इंदौर के इतिहास में विमानतल रोकने का कांड भारतीय विमानतल के इतिहास में सदियों चलेगा. इसने बहुत सारे तथ्यों को एक साथ उजागर कर दिया। विमानतलों पर केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल जो विमान तल की सुरक्षा के लिए रहता है। क्या कर रहा था. वह या दूसरके जो सुरक्षा सैनिक थे, क्या भूमिका थी। राज्य पुलिस की भूमिका तो मांगने पर शुरु होती है, यदि हुड़दंगी उस तरफ बढ़ रहे थे तो क्या राज्य पुलिस बुलाई गयी थी। नि:सदेह राज्य पुलिस ने संदिग्ध भूमिका निभाई।

विदेशी आंतकवादी गोलियां और बम बरसा कर लोगों को मारते है। बाद में देश के ही राजनैतिक लोगों के इशारे पर अपने ही लोग बंद और खोलने के नाम पर तोड़-फोड़ मचा कर आतंक फैलाते है। कितना अंतर है दोनों में, जनता तो दोनों तरफ ही पिसती है। धर्म के नाम अधर्म क्यों?

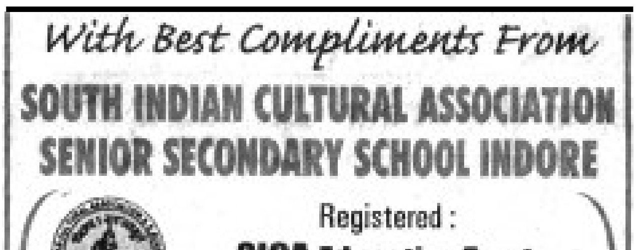

आदि. जिलों के आ.जा.क. सहा आयुक्त व अन्य मचाये हैं भारी लूट

करोड़ों की योजनाओं, अवैध नियुक्तियों, स्थानांतरणों से भारी कमाई

इंदौर संभाग के आदिवासी जिलों के आदिम जाति कल्याण विभाग के सहायक आयुक्तों, उपसंचालक कृषि, पशु चिकित्सा सेवायें, सड़कों, वन विकास, महिला एवं बाल विकास जिला शिक्षा अधिकारी, जिला पंचायतों के मुख्य कार्यपालन अधिखारियों ने केन्द्र व राज्य शासन की आदिवासियो के विकास, शिक्षा गरीबी रेखा से नीचे वाले परिवारों को सस्ता अनाज, मुफ्त बैल जोड़ियां, गांवों से शहरों को जोड़ने वाली सड़कों में ग्रामीण यांत्रिकीय के कार्यपालन अभियंताओं, लोक निर्माण जल संसाधन लोक स्वास्थ्य यांत्रिकीय विद्युत मंडल के कार्यपालन अभियंताओं के साथ ही जिलों के जिलाधीशों ने ग्रामीण और जिलों के विकास की राशि मात्र कागजों पर खाना पूर्ति कर ये शूकरों की फौज स्वयं डकार रही है। इन घोटालों में राज्य व केन्द्र शासन का 50 से 80% पैसा इन हरामखोर अधिकारियों द्वारा पिछले 57 वर्षों की आजादी के बाद से केवल उदरस्थ ही किया गया वहीं ग्रामीण आदिवासी फटेहाल जिंदगी जीने के लिये विवश हैं।

इंदौर संभाग के धार, झाबुआ, खरगोन, बड़वानी, बुरहानपुर 5 जिले आदिवासी जिलों की श्रेणी में आते हैं। जहां पर आदिवासियों के जीवन स्तर सुधारने के लिए केन्द्र व म.प्र. सरकार से विभिन्न मदों में करोड़ों रुपया प्राप्त होता है। जिसमें से अधिकांश शासकीय धन यहां बैठे भ्रष्ट जिलाधीशों से लेकर जिला पंचायतों के भ्रष्ट जिला पंचायत मुख्य कार्यपालन अधिकारियों,

महा भ्रष्ट स.आ.आदिवासी कल्याण पूर्व में झाबुआ, वर्तमान में धार में इन पर भी अनेकों भ्रष्टाचार की जांचें लंबित

इंदौर जिले के पूर्व समन्वयक भ्रष्टाचार के आरोपों में पदोवनत होकर मेघ नगर में विकास खण्ड शिक्षा अधिकारी नियुक्त किए गए

यांत्रिकीय, म.प्र. जल संसाधन म.प्र. ग्रामीण यांत्रिकीय विभागों के कार्यपालन यंत्री, जिला शिक्षा अधिकारी, उपसंचालक, व सहा. संचालक पशु चिकित्सा, कृषि हार्टिकल्चर, मुख्य चिकित्सा अधिकारी जन स्वास्थ्य, महिला एवं बाल विकास जिला खाद्य अधिकारी, उपजिलाधीश, तहसीलदार, विकास खंडों के विकास खंड अधिकारी, विकास खंड शिक्षा अधिकारी तक ही करोड़ों में धन कागजों की खाना पूर्ति कर ही डकार लिया जाता है।

पूर्व में धार जिले के आदिमजाति विकास के सहायक आयुक्त, बीजी मेहता जो अब झाबुआ में है और झाबुआ के एसआर भारती जो अब धार जिले में हैं ने कदम-कदम भारी घोटाले

और कागजी खानापूर्ति कर करोड़ों रुपये 200 से ज्यादा छात्रावासों के मासिक खर्च विद्यार्थियों के भोजन और वस्त्रों में कटोत्री कर की जा रही है।

छात्रावासों के निर्माण में झाबुआ में लगभग 25 भवन लघु उद्योग निगम से तैयार करवा लिये गये परन्तु भारती ने उनको विभागीय तौर पर स्वीकार नहीं किया क्योंकि इस हरामखोर को पर्याप्त कमीशन नहीं मिला जिससे करोड़ों की लागत के ये भवन रखरखाव और साफ-सफाई के अभाव में नष्ट हो रहे हैं। झाबुआ में भारती ने मेघनगर में संविदा शिक्षकों की नियुक्ति प्रति शिक्षक रु. 20,000 डकारे और अयोग्य व पढ़ाने में अक्षम अपंगों को नियुक्तियों दी साथ ही शिक्षकों के सामान्य भविष्य निधि के भुगतान में भी करोड़ों डकारे गये। झाबुआ जिले के 8 तहसीलों के 12 विकास खंडों के प्रत्येक विकासखंड शिक्षा अधिकारी से रु. 10,000 प्रति माह वसूले जाते थे बदले में विकास खंड शिक्षा अधिकारियों को मध्यान्ह भोजन छात्रावासों के मासिक खर्चों यथा भोजन साबुन, तेल, पानी, शिक्षण व खेल सामग्रियों गेंहूं, दाल, चावल, शकर, तेल आदि को खुले बाजार में बेचने की पूरी छूट थी ये जालसाज कांग्रेस के शासन काल में उर्मिला सिंग का रिश्तेदार बताकर अपने कुकर्मों की जांच और पकड़ से बचा रहा, जबकि पूर्व में मंडल में किये भ्रष्टाचारों की विभागीय जांचे इस भ्रष्ट श्वान पर लंबित है। धार में आकर भी इसने 7 तहसीलों, 13 विकासखंड शिक्षा अधिकारियों, 250 से ज्यादा आदिम जाति छात्रावासों के अधीक्षकों और प्रभारियों से खुलकर वसूली का कार्यक्रम शुरू कर दिया है। छात्रावास की मरम्मत सुधार कार्यों, पुताई आदि के नये छात्रावासों के निर्माणों और निर्माणाधीन कार्यों में जो कि करोड़ों के हैं। 25% तक कमीशन भुगतान में वसूल रहा है।

भ्रष्ट बीजी मेहता ने 13 विकास खंडों में शिक्षकों, छात्रावास प्रभारियों से स्थानांतरण में रु. 10-20 हजार लेकर अलग-अलग हर शिक्षक से धन डकार कर फर्जी तरीके से कर दिये। लगभग 60 से ज्यादा नियुक्तियां प्रतिनियुक्ति 20-30 हजार रु. लेकर सूत्रों के अनुसार 60 नियुक्तियां कर दी जिनकी जांच इंदौर के संभागीय आयुक्त पी.के. दास पास लंबित है। अगले अंकों में पढ़िये झाबुआ के कड़कनाथ मुर्गे की प्रजाति विकास, आदिवासी जिलों में आदिवासी किसानों को मुफ्त बैलजोड़ी वयस्क देने की अपेक्षा बछड़ों की जोड़ी कागजी खाना पूर्ति कर करोड़ों रुपये डकारे जा रहे हैं। जहां वयस्क बैल जोड़ी की कीमत रु. 15-25 हजार होती है वहीं बछड़ों की जोड़ी रु. 5 हजार तक में मिल जाती है अर्थात प्रति जोड़ी रु. 10 से 20 हजार कंपाउंडरों, डाक्टरों से लेकर सहायक और उपसंचालक ही डकार रहे हैं।

शेष अगले अंकों में.......

खाद्य विभाग भ्रष्टों का जमावड़ा

10-10 वर्षों से बैठे हैं कुंडली मारे

इंदौर। इस महानगर में 99 प्रतिशत अधिकारी भ्रष्टाचार से लूट-खसोट और वसूली की नियत से ही आते हैं। जिला खाद्य नियंत्रक कासट भ्रष्ट और निकम्मे को सूचना के अधिकार के अंतर्गत उसके यहां पर पदस्थ होने के बाद से दो-तीन पत्र दिये जा चुके हैं। परन्तु हरामखोर पत्रोत्तर कैसे दे एक तो लूटने से फुर्सत मिले दूसरा अपने कुकर्मो और भ्रष्टाचार की पोल कैसे खुल जाने दे।

जिला खाद्य नियंत्रक व आपूर्ति अधिकारी की निगाहें वसूली पर

वैसे यहां बैठे 10 वर्षों से ज्यादा में भी 4-5 सहायक खाद्य अधिकारी जो अपने आप को सहा. खाद्य नियंत्रक लिखते हैं उसमें भ्रष्ट मीना भ्रष्ट अंतरिया, शुक्ला, जाटव, जायसवाल और जैन हैं। जिन भ्रष्टों को यहां रहते ही पदोन्नति मिली और यहीं कुंडली मारे, पंपों, मिट्टी के तेल, हॉकरों, राशन दुकानों से खुलकर लूट-पाट कर रहे हैं।

इंदौर में मात्र 4 सहा. खाद्य अधिकारियों के पद हैं। 17 निरीक्षकों के स्थान पर मात्र 9 निरीक्षक हैं। जिन सहा. खाद्य अधिकारियों को 5 वर्ष से ज्यादा हो गये हैं। उन्हें भिंड, मुरैना, रीवा, शहडोल, बालाघाट क्यों नहीं भेजा जाता।

पूर्व का भ्रष्ट, लुटेरा, एस.पी. रुस्तमसिंह प्रदेश का खाद्य मंत्री है। कैसे इन भ्रष्टों को हटायेगा। वसूली करेंगे तो हिस्सा रुस्तम सिंग को भी पहुंचा देते हैं।

पोषाक बदली लूट की मानसिकता तो वही है।

इन्दौर। भ्रष्ट शासन भ्रष्टाचार मिटाने के जनता को सपने दिखाकर स्वयं सत्ताधीश बनते ही अपने लूट-खसोट और भ्रष्टाचार में गले तक डूबकर भ्रष्ट लोगों को कर्मचारियों को बढ़ावा देता है। जहां तक जनता का सवाल है भारत की जनता गुलामी पसंद और घोर स्वार्थी है। स्वाभाविक है शासन-प्रशासन में बैठे गिद्धों की फौज उन्हें लूटने और वसूली में हर दिन नया शिगूफा फेंक कर अपने स्वार्थ सिद्ध करेगी।

एक तरफ शासन घोषणायें करता है 3 वर्ष से ज्यादा कोई कर्मचारी अधिकारी अपने पद पर नहीं रहेगा। दूसरी तरफ अपनी वसूली के लिये भ्रष्टों हरामखोरों को 10-10 वर्ष से ज्यादा हो जाने पर भी हिलाता नहीं। एक स्थान पर कर्मचारी अधिकारी 5 वर्ष से ज्यादा रहेगा तो अपनी वसूली के लिये भ्रष्टाचार की जड़े जमायेगा। व्यवसाय करेगा, जिनसे वसूली करेगा उन्हें कुकर्म करने कीपूरी छूट देगा, ताकि उसे महीना मिलता रहे। यही हाल इंदौर के खाद्य आपूर्ति विभाग का है। जहां स्वीकृत 4 पद सहायक खाद्य अधिकारी के स्थान पर 9 सहायक खाद्य अधिकारी हैं जिसमें से 7 ने तो 10 वर्ष से ज्यादा का कार्यकाल इंदौर में ही पूरे कर लिये। 1-2 घूम फिर कर वापिस यहीं जम गये हैं। इन भ्रष्ट हरामखोरों में (1) आर.के. मीना, 12 वर्ष से ज्यादा, (2) जायसवाल 12 वर्ष से ज्यादा, (3) जाटव 9 वर्ष से ज्यादा (4) अंतरिया 12 वर्ष से ज्यादा, (5) शुक्ला 10 वर्ष से ज्यादा (6) एन.के. जैन 8 वर्ष से ज्यादा हो चुके, साथ ही 7 का निरीक्षक अश्विनी नायक 12 वर्ष से ज्यादा, त्यागी 10 वर्ष से ज्यादा हो चुके हैं।

ये सारे हरामखोर और भ्रष्ट पेट्रोल पंपों से, राशन दुकानों से, मिट्‌टी के तेल हॉकरों से हर महीने वसूली करते हैं। उस पर खाद्य नियंत्रक कासट को भी दोनों हाथ वसूली चाहिये।

जि. खाद्य नियंत्रक कासट को सूचना के अधिकार के अनतर्गत अनेकों पत्र दिये जा चुके हैं। ये भ्रष्ट इतना मक्कार है कि जब इसके पास जाओ तो कभी मीना की तरफ नागर की तरफ पत्रोत्तर के लिये पहुंचा देगा। जुलाई 2004 में मीना से बात करने के लिये गये तो ये हरामखोर भ्रष्ट बोलने लगा कि हम जानते हैं कपित्रकार कितने भ्रष्ट होते हैं। जब समय माया के प्रतिनिधि ने पलटकर जवाब दिया कि मीना अपने गिरेबां में झांक लो यदि हमने पूरा सच प्रकटकर दिया तो रहना मुश्किल हो जायेगा। ये और अश्विनी नायक दोनों ही अपनी बीवीयों के नाम से एम वे का व्यवसाय पिछले पैंच से ज्यादा वर्षों से कर रहे हैं। ये बात रुस्तम सिंग को भी मालूम है। जबकि ये पूर्णतः गैर कानूनी है। इनकी किसी भी एमवे की व्यावसायिक सभा में वीडियो शूटिंग करके नौकरी से तत्काल हटाया जाना चाहिये। रु. 12-15 हजार माह का वेतन पाने वाले अश्विनी और मीना के पास जो कारें हैं, वे आय से ज्यादा संपत्ति के पर्याप्त सबूत हैं।

नियंत्रक कासट से लेकर सभी 9 सहायक खाद्य आपूर्ति अधिकारी और 9 निरिक्षक जिसके 17 पद इंदौर में स्वीकृत हैं। पूरा हिभाग चूंकि 100 पेट्रोल पंपों, 500 हॉकरों से, लगभग 400 से ज्यादा राशन दुकानों से 25 से ज्यादा गैस डीलरों जो ईंधन गैस की आपूर्ति करते हैं। खुलकर दोनों हाथों वसूली करते हैं। यही कारण है कि 30 के लगभग ग्रामीण पेट्रोल और डीदल पंप पूरे एबी रोड, आर.एन.टी. मार्ग, जवाहर मार्ग, धार मार्ग, एरोड्रम रोड के पुलिस पेट्रोल पंप को छोड़कर अधिकांश मिलावटी, साल्वेंट युक्त, मिट्‌टी का तेल, फर्नेस ऑइल, नेफ्था, जैसे कम आवटंन के पेट्रोल उत्पादों की खुलकर मिलावट करते हैं। कुछ तो इतने कुख्यात हैं जिनमें पवन आटो सर्विस, नरोत्तम दास एंड कं., भाटिया गीता भवन का इंटरनेशनल, एमजी रोड के सभी पेट्रोल पंप पर इनमें अधिकांश के पास मिट्‌टी के तेल की डीलर शिप भी है, फिर कश्यप एंड कं. राजमोहल्ला, एरोड्रम रोड के मल्हारगंज का पेट्रोल पंप, खुलकर मिलावट करने के बाद भी शान से चल रहे हैं।

B.H.M.S. सत्र 2005-06 में प्रवेश

बैचलर ऑफ होम्योपैथी मेडिसन एंड सर्जरी

5 1/2 वर्षीय डिग्री पाठ्यक्रम (एक वर्षीय इंटनंशिप सहित)

मान्यता : देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर, म .प्र. शासन चिकित्सा शिक्षा विभाग एवं सेन्ट्रल कोसिल ऑफ होम्योपैथिक (नई दिल्ली)

पात्रता - 12वीं (फिजिक्स, केमेस्ट्री एवं बायोलाजी विषय के साथ 50% अंकों के साथ उत्तीर्ण) या पी.एच.यू.टी उत्तीर्ण विद्यार्थी

नोट :- प्रवेश म.प्र. शासन के निर्देशनुसार

इंदिरा गांधी मेमोरियल
होम्योपैथिक चिकित्सा महाविद्यालय
131, प्रकाश नगर धार (म.प्र)
दूरभाष : 07292-234488, 506150
मो. 98272-10150 फैक्स : 506150

महावीर बाल मंदिर

अनुप नगर, इन्दौर फोन :- 2551112, 2571106

कक्षा नर्सरी से 12वीं तक

विशेषताएं :- प्रशिक्षित अध्यापकों द्वारा अध्यायन, विशाल खेल मैदान, न्यूनतम शुल्क में बेहतर शिक्षा,

प्रवेश प्रारंभ प्रवेश प्रारंभ प्रवेश प्रारंभ

स्कूली शिक्षा में कदम-कदम भ्रष्टाचार का तांडव

मान्यताओं के नाम पर वसूली का खेल, आनंद जैन का स्कूलों से वसूली का दोहरा षड्यंत्र

वर्षों से कुंडली मारे बैठे म.प्र. माध्यमिक शिक्षा मंडल इंदौर-उज्जैन संभाग के आंचलिक सचिव भ्रष्ट, निकम्मे, षड्यंत्रकारी आनंद जैन की वसूली के कृत्यों से समय माया वर्षों से परीचित करवा रहा है। छोटे स्कूल जो निम्न मध्यमवर्गीय और मध्यम वर्गीय बच्चों को रु. 50 से रु. 100-200 में 12वीं स्तर तक की शिक्षा उपलब्ध करवाते हैं। से वसूली बंद करने व करवाने का दोहरे षड्यंत्र रचकर एक तरफ रु. 10,000 मांगता है तो दूसरी तरफ उच्च वर्गीय स्कूलों जहां प्राथमिक शिक्षा से 12वीं तक की शिक्षा में हजारों रुपये प्रतिमाह की मोटी फीस वसूली जाती है स्वाभाविक है तो इसे वार्षिक मोटी रिश्वत देते हैं। को लाभ पहुंचाने विद्यार्थियों की संख्या बढ़ाने उनकी तरफ विद्यार्थियों का रुख मोड़ने के लिये स्कूलों का बंद करने व करवाने का षड्यंत्र रचता है। मान्यताओं के नाम पर जिन 42 नियमों की दुहाई दी जाती है। क्या वो सारे नियम शासकीय और बड़े विद्यालय पूरे करते हैं। नहीं वहां भी विद्यार्थियों को पीने का पानी भी कंधों पर लटका कर ले जाना पड़ता है। उनकी मान्यतायें र-क्यों नहीं की जाती।

इंदौर।ईमानदारी से समाज सेवा करने के इच्छुकों को शासन की नीतियां और भ्रष्ट अधिकारी अपनी वसूली के कैसे परेशान करते हैं। ये निम्न वर्गीय और मध्यमवर्गीय क्षेत्रों में विद्यालयीन शिक्षा के विद्यालय के संचालकों से विद्यालय चलाने वालों से आसानी से जानी जा सकती है। दूसरी तरफ भ्रष्ट संचालक जिन्होंने सभी प्रकार की शिक्षा को कमाई का माध्यम बना रखा है। मोटी शिक्षण शुल्क वसूल कर वो परीक्षाओं में नकल करवाने से लेकर फर्जी अंक सूचियों और प्रमाणपत्रों का कारोबार करने में लगे रहते हैं। जिसमें न्यू सिटी कांवेंट श्रीकृष्ण एनीबेसेंट, जैसे स्कूल हैं। दोनों हाथों से वसूली करके इन आनंद जैन, बी.के. शर्मा जिला शिक्षा अधिकारी इंदौर जैसे भ्रष्टों के पालते हैं और अपने इशारों पर नचाकर षड्यंत्रों की रचना कर गरीब जनता और विद्यार्थियों को परेशान करते, परीक्षा परिणाम बिगड़ते हुए विद्यार्थियों का जीवन बर्बाद करते हैं।

इस बार 10वीं, 12वीं की परीक्षाओं में एक-दो दिन छापे की कार्यवाही भ्रष्ट बी.के. शर्मा आ.स. आनंद जैन ने वहीं की जहां से धन नहीं मिला था। जिन भ्रष्ट स्कूल संचालकों से जो जालसाजी पूर्व कृत्य करते हुए खुले में विज्ञापन देकर 10वीं,12वीं फेल या जिन्होंने 5वीं, 8वीं भी पास नहीं की होती उन्हें सीधे 10वीं भी पास करवाने की गारंटी देने वाले स्कूल, शिक्षण संस्थायें खुले में श्याम पटल पर नकल करवा कर पास करवाते हैं।

पूरे म.प्र. में जिला शिक्षा अधिकारियों ने और आंचलिक सचिवों, केन्द्र संचालकों ने खुल कर नकल करवाई गई और खुल के पैसा डकारा गया। ऐसा अधिकांश कारोबार इन भ्रष्टों ने मोटी फीस वसूल करने वाले उच्च मध्यमवर्गीय विद्यर्थियों के लिये किया।

भ्रष्ट उच्च अधिकारी अपनी वसूली के लिये किडनी के मरीज से रिश्वत मांगने से नहीं चूकते तो बच्चों की शिक्षा में वसूली से कैसे बाज आ सकते हैं।

स्वाभाविक था ईमानदार, समाजसेवा के भाव से मेहनत कर शिक्षा प्रदान करने वालों के पास चूंकि जालसाजी पूर्ण कृत्यों से, धन नहीं आता इसलिये वो सब इन भ्रष्टों को टुकड़ा डालते रहने के कारण ये उन 42 नियमों का वास्ता देकर उनकी मान्यताओं को जो कि अक्टूबर 04 से अगले 5 वर्षों के लिये बढ़ानी है भारी न केवल प्रताड़ित कर रहे हैं वरन न्यूनतम रु. 10,000 की मांग कर रहे हैं। अन्यथा प्रारंभ हुए शिक्षा सत्र से मान्यतायें समाप्त करने की धमकी दे रहे हैं।

स्कूल संचालकों के वैसे तो हर जिले में संघ हैं, परन्तु माफियाओं के संघ ज्यादा शक्तिशाली, सारे भ्रष्ट, जालसाजी और नकल करवा कर पैसा ऐंठने वालों के हैं साथ ही उनकी राजनैतिक पहुंच भी नेताओं और शिक्षा मंत्री तक होने के कारण वो जिला शिक्षा अधिकारियों और प्रदेश के आंचलिक सचिव और म.प्र. माध्यमिक शिक्षा मंडल के गंदगी चाटने वाले श्वानों को जेब में लेकर चलते हैं। उनका वार्षिक चंदा भी मोटा होता है। स्वाभाविक है कम शिक्षण शुल्क लेने वाले निम्न, निम्न मध्यवर्गीय क्षेत्रों के विद्यालय संचालक धन खर्चने की क्षमता में न होने के कारण अपनी मांगों को पूरा करवाने में अक्षम रहते हैं। इसलिये उनकी मान्यता समाप्ति की हर वर्ष धमकी देकर वसूली की जाती है जिसके परिणाम स्वरूप स्कूलों के शिक्षकों तक को वेतन महीनों नहीं मिलता है। जो मात्र रु. 600 से लेकर रु. 1000-2000 में पढ़ाते हैं।

इन हरामखोरों को इससे बिल्कुल फर्क नहीं पड़ता कि इनकी वसूली के कारण शिक्षकों के घरों में चूल्हे नहीं जलेंगे। या उस शिक्षक के बीवी बच्चों को भूखे या आधे पेट खाकर रहना पड़ेगा। कई स्कूल संचालकों से चर्चा करने पर ज्ञात हुआ कि यदि हम स्कूल बंद कर देंगे तो शिक्षकों के वेतन के साथ लाखों रुपये जो संपत्तियों और विद्यालय में विनियोजित किये हैं उसका क्या होगा? साथ ही हमें भी नौकरी अधेड़ अवस्था में रु. 1000-2000 से ज्यादा की नहीं मिलेगी।

आनंद जैन बुंदेलखंडी जैनी है जो पैसों को दांतों से पकड़ता है। आंचलिक कार्यालय के बाबुओं से वसूली करने वाला अन्यथा उन्हें भी परेशान किया जाता है। कर्मचारी भी इसकी नोंच खसोट की नीति से परेशान हैं। भोपाल के प्रशासनिक हलकों में भी इसे यहां लाइन अटैच किया गया है क्योंकि इसने हर विभाग में अवैध कार्यों से भारी वसूली के कारण हटाया गया था। इस भ्रष्ट के स्थानांतरण से संभावित है स्कूल संचालकों को राहत मिल सके।

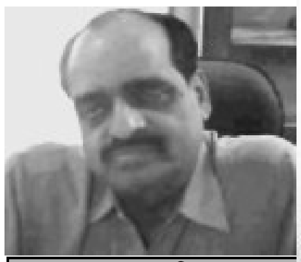

आ. सचिव म.प्र.मा.शि.मं.भोपाल के पश्चिमी म.प्र.के इंदौर उज्जैन संभाग के निजी स्कूल से वसूली के लिए परेशानी खड़ी करना, इनका शोक हैं।

इंदौर जी.शि.अधिकारी भ्रष्टाचार से वसूली के लिए नए-नए हथकंडे. अनैकों जांचे लंबित

पश्चिमी क्षेत्र की महत्वपूर्ण उपलब्धी
विमल हायर सेकण्डरी स्कूल
10, रघुवंशी कॉलोनी बी.आई.पी. रोड, इन्दौर
कक्षा 9वीं से 12 वीं तक (हिन्दी माध्यम)

• कम्प्यूटर शिक्षा • लायब्रेरी • प्रयोगशाला • अनुभवी टीचर्स • वाहन सुविधा उपलब्ध
आवश्यकता है: अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम से पढ़ाने हेतु अनुभवी शिक्षक-शिक्षिकाओं की.
प्रवेश प्रारंभ
कक्षा नर्सरी से 12 वीं तक
अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम
बाल पब्लिक हायर सेकेण्डरी स्कूल (10+2)
11-ए, सुभाष नगर, तीन पुलिया के पास, इन्दौर. फोन : 2535540

न्यू गोल्डन हायर सेकण्डरी स्कूल
स्थापित : 1976
29 वर्षों से शैक्षीणक अनुभव एवं अटूट विश्वास का प्रतीक
प्रवेश प्रारंभ
• उत्तम कार्य • उत्तम शिक्षण • उत्तम अनुशासन
कक्षा नर्सरी से कक्षा 12वीं तक
विषय:- गणित, जीव विज्ञान, कॉमर्स (प्लेन एवं कम्प्यूटर)
समय: सुबह 9.30 से दोपहर 1.30 बजे तक
विशेषताएं :- किसी भी प्रकार की डोनेशन, बिल्डिंग फेड, कॉशन मनी, डेबलपमेन्ट फंड एवं कम्प्यूटर फीस नहीं ली जाती है।
97/1, भावानीपुर कालोनी, अन्नपूर्णा रोड़, इन्दौर फोन :- (0731) 2792848,2792688

प्रवेश प्रारंभ
स्वच्छ, सुरम्य व प्राकृतिक वातावरण, अपने घर से दूर अपना ही एक घर
गुरुकुल आकाश बोर्डिंग मिनी हायर सेकेण्डरी स्कूल
अध्ययन के साथ रहने एवं भोजन की उत्तम व्यवस्था
कम्प्यूटर एवं अंग्रेजी अध्यापन पर विशेष ध्यान
(विज्ञान वाणिज्य एवं कला संकाय)
कक्षा नर्सरी से 12वीं तक
टेम्पो स्टेण्ड के पास, बीजलपुर, इन्दौर फोन:- 3221753 मो. 98260-45353

पिंक फ्लावर हायर सेकणडरी स्कूल
नन्दानगर स्टेडियम ग्राउण्ड, जनता क्वाटर, इन्दौर फोन नं.2435124
अंग्रजी, कम्प्यूटर एवं संस्क्रत विषयोंं का प्रारंभ से ही अनिवार्य शिक्षण। संगीत, कराटे, नैतिक शिक्षा, खेल,योगा आदि बाल-विकास का सर्वसुविधायुक्त विघालय, जहाँ बच्चों के सर्वागीण विकास के लिए समर्पित शिक्षा की आधुनिकतम मान्यताओं पर आधारित व्यवस्था की गई हैं।
नोट:- योग्यता एवं टेस्ट के आधार पर प्रवेश।
प्रतिभाओं को प्रवेश में प्राथमिकता।
प्रवेश प्रारंभ (नर्सरी से 12 वीं) वाणिज्य, कम्प्यूटर, कला, विज्ञान (गणित, बाया) संकाय
-प्राचार्या
सफलता की एक अनिवार्य शर्त हैं-ध्येय के प्रति अटुट निष्ठा

श्री गणेशाय नमः
गरिमा विद्या विहार
उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
प्रवेश प्रारंभ
हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम
न्यूनतम शुल्क में उच्च शिक्षा, कोई कॉशनमनी, डोनेशन नहीं, मात्र 10 माह का शुल्क
पश्चिमी क्षेत्र का एकमात्र ख्याति प्राप्त संस्थान
सम्पर्क समय प्रातः 9 से 3
नर्सरी से 12वीं तक गणित, जीव विज्ञान, वाणिज्य संकाय एवं कम्प्यूटर
बोर्ड कक्षाओं में उच्चतम अंक प्राप्त प्रतिभावान विद्यार्थियों को बधाईयां
32. किला रोड़, इन्दौर (म.प्र.)- 452015, फोन:- 0731-2420304

The Rising Star for your Child's Growth
RISING STAR HIGHER SECONDARY SCHOOL
An English Medium School (10+12), Affiliate to MPCB
148, Khatiwala Tank, Indore (M.P.) Ph: 366433
ADMISSION OPEN
Nursery to 12th
Special Features
Computer Room
Highly with Commerce
Teaching by Qualified Teachers
Games & Marshal Art
Laboratory Room
Computer in 11th, 12th Standard
Bus Facility
Cultural Activities N.C.C.

न्यू फादर एंजिल हायर सेकेंडरी स्कूल
798,बजरंग नगर, इन्दौर फोन : 5032785
प्रवेश प्रारंभ
CBSEपेटर्न
हिन्दी व अंग्रजी माध्यम
नर्सरी से12वीं
कामर्स, कम्प्यूटर एप्ली, बायो मेथ्स
कक्षा 1ली से कम्प्यूटर योगा, प्राणायम प्रशिक्षण अनिवार्य, इन्डोर गेम, प्ले स्कूल, स्काऊट गाइड आदि, न्यूनतम शुल्क
समय प्रात: 8 से 4 बजे तक

विध्या विजय बाल मंदिर हायर सेकेण्डरी स्कूल
उचित प्रयास, उत्तम परिणाम
CBSE पेटर्न
प्रवेश प्रारंभ
नर्सरी से हायर सेकेंण्डरी
स्कूल बस एवं छात्रावास सुविधा भी उपलब्ध
विशेषताएं:- कक्षा 3 से कम्प्यूटर प्रशिक्षण. अनुभवी शिक्षिकओं द्वारा अध्यायन. कमजोर छात्रों के लिए अतिरिक्त कक्षाएं, साइंस लेबोटेरी
स्कूल: SS.4/ स्लाइज नं. 4, स्कीम नं. विजय नगर, इंदौर फोन:- (0) 2532575, 2570599 (R) 2554575 सिटी आफिसः गुर्जर परिधान SS.44 नन्दानगर चौराहा, मेन रोड़, इन्दौर

इंडियन हाई स्कूल
प्रवेश प्रारंभ
नर्सरी से 10वीं. अंग्रेजी- हिन्दी माध्यम
नो बिल्डींगफंड. सिर्फ मासिक शुल्क पर सर्वसुविधा युक्त शिक्षण. नो डोनेशन
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें 810 द्वारकापुरी कालोनी, इन्दौर फोन:- 2382244
मो. 9303220019, 9826635356
समय: सुबह 9 से दोपहर 2 बजे तक

जहां आपके बच्चों की खुशियां आपके जीवन में रंग भर दे
प्रवेश प्रारंभ
कम्प्यूटर शिक्षा, न्यूनतम फीस,आधुनिक शिक्षा सांस्कृतिक गतिविधियां, प्रशिक्षित स्टॉफ
सर्वोदय बाल विनय मंदिर
सर सिरेमल बापना मार्ग (सदर बाजार मेनरोड़) इन्दौर फोन: 2420365

शासन द्वारा मान्यता प्राप्त (सफलता के 25 वर्ष) हिन्दी,अंग्रेजी माध्यम
टेलेन्ट हायर सेकण्डरी स्कूल
प्रवेश प्रारंभ
नर्सरी से 12वीं तक
गणित, बॉयलॉजी, कॉमर्स
कम्प्यूटर शिक्षा, होस्टल व स्कूल बस सुविधा. नृत्य संगीत, योग, खेलकूद व सांस्कृतिक गतिविधियां
81 जानकीनगर एक्सटेंशन, इन्दौर फोन:- 2402412,5093448

खाद्य एवं औषधि अपमिश्रण में भ्रष्टाचार-3

भ्रष्ट औषधि निरीक्षक ही बीमारों की मौत का कारण

नकली स्तरहीन लौह विटामिन की गोलियों के कारण डॉ. शरद पंडित की पिटाई भी हो चुकी है देवास के गांवों में इंदौर के खाद्य एवं औषधि अपमिश्रण विभाग में सदियों से बैठे भ्रष्ट वरिष्ठ औषधि निरीक्षक साहनी और आशीष त्रिवेदी जो औषधियों के उत्पादन औषधियों और रसायनों की लगभग 300 से ज्यादा थोक और इंदौर संभाग की 5000 से ज्यादा फुटकर दुकानों के निरीक्षण आदि को देखते हैं। धन प्रेमी ये भ्रष्ट अपनी कमाई के लिये थोक व फुटकर औषधि विक्रेताओं, औषधि उत्पादकों, विक्रय प्रतिनिधियों, प्रबंधकों के साथ मिकर विशुद्ध नकली मिलते-जुलते नामों की स्तरहीन औषधियों सिरपस, केप्सूल, टेबलेट्स, इंजेक्शन, फ्लुइड्स का वर्ष भर में अरबों रुपये का अवैधानिक कारोबार करवा डालते हैं। जिससे एक तरफ रोगियों का महंगी दवाओं का पूरा फायदा नहीं मिलता दूसरी तरफ राज्य और केन्द्र शासन को भी करोड़ों रुपये के करों से आगम आय की हानि उठानी पड़ती है।

निःसंदेह भ्रष्ट डेढ़ और सवा दो दशकों से यहां कुंडली मारे बैठे हैं जबकि शासन में तीन वर्ष से ज्यादा एक स्थान पर नहीं रखा जाता। उस पर विभागायुक्त श्रीमती सलीना सिंग फिर बैठ जाये तो इनकी पौ बारह

इंदौर। एशिया की नकली दवाओं के उत्पादकों की मंडी बनाने का श्रेय यहां पर औषधि उत्पादन कार्य देख रहे वर्तमान में 22 वर्षों से बैठे वरिष्ठ निरीक्षक साहनी और निरीक्षक आशीष त्रिवेदी जो 14 वर्षों से विराजमान हैं। ये उत्पादकों, थोक व फुटकर औषधि विक्रेताओं जिसमें 25 से लेकर 4000 गुना तक लाभांश मिलता है इतना पैसा बटोर लेते हैं कि लाखों रुपये की रिश्वत स्वास्थ्य मंत्री, मुख्य मंत्री और औषधि नियंत्रक को आसानी से बांट सकें। यही कारण है कि इन पर तीन वर्षों वाला नियम लागू नहीं हो पाता कोई 8 वर्ष, कोई 14 और दो ने 22 वर्ष पूरे कर लिये हैं। पर कोई इन्हें यहां से स्थानांतरित नहीं करता। स्वाभाविक है दुधारू गाय लात मारे या सींग दूध ज्यादा देती है सारे दोष माफ रोगी कल के मरते आज मरें इनकी बला से। पूरी दुनिया में नकली दवाइयों की मंडी के रूप में बदनाम हैं तो क्या फर्क पड़ता है।

नकली दवाओं में कई प्रकार से काम किया जाता है। ये सारे भ्रष्टों, लुटेरों की फौज आंख मूंद कर चुपचाप सबको स्वीकार पैसे वसूल कर करती रहती है। बड़ी-बड़ी कंपनियों की दवाइयों में सबसे बड़ी जालसाजी में इनके साथ हिस्सेदार होते हैं। कंपनी के विक्रय प्रबंधक और कंपनी को थोक वितरक विक्रेता वह एक बैच नं. की वही औषधि किसी छोटे उत्पादक से बनवाकर जिसमें

महाधूर्त औषधी निरीक्षक साहनी
लूट, वसूली और भ्रष्टाचार के दम 22 साल से इंदौर में

भूत पूर्व पुलिसिया अधिकारी रुस्तम सिंह
वर्तमान में म.प्र.स्वास्थ्य मंत्री वसूली के लिए 25 जून को आकर सब को हड़का गए

लेवेल, औषधि के तल या घटक कम बढ़ मात्रा में देशी तरीके से बनवाकर अपने यहां से 60 से 80% तक बेच देता है। 20 से 40% तक माल जिसमें कम लाभ का प्रतिशत होता है वही बेचता है। इस प्रकरा दूसरे उत्पादक को वही माल 10% की कीमत पर वितरक को आपूर्ति करने से उसके सारे कर बच जाते हैं। वही माल वितरक 20 से 30% में फुटकर विक्रेता को बेच देता है। इस प्रकार का केवल इंदौर मंडी से प्रतिदिन करोड़ों रुपये का माल बेच दिया जाता है। वैसे तो ये जानकर भी वसूली करके चुपचाप बैठे रहते हैं। ऐसे विक्रेताओं की न केवल इंदौर के दवा बाजार में भरमार है वरन् पूरे म.प्र. के साथ देश भर में भरमार है। इस तरह से नकली औषधि बेचने में वितरक, स्टाकिस्ट थोक विक्रेता इंदौर में ही जो बड़ी और नामी गिरामी कंपनियों के 90% वितरक और उनके विक्रय प्रतिनिधि ही लाखों रुपये का बीच की हिस्सा डकार जाते हैं। यह खेल इंदौर में पिछले 1970 के दशक से चल रहा है। ऐसे उत्पादकों को आशीष त्रिवेदी और साहनी की पूरी छूट है। यह सबसे आसान तरीका है करोड़ों रुपये कमाने का ऐसे ही नहीं थोक विक्रेता स्टाकिस्ट, सी एंड एफ और वितरक बनने के लिये लाखों रुपये खर्च नहीं करता। दूसरा यहां पर एक तरीका और प्रचलित है कि ऐसा थोक विक्रेता, स्टाकिस्ट, एजेन्ट, सीएंडएफ, वितरक यहां बैठे सैंकड़ों उत्पादकों को बुलवाकर उनसे अपनी शर्तों पर दवा का सेंपल लेवेल देकर अपनी मर्जी से माल बनवा कर उसकी कीमत उत्पादक को दे देता है।

इस तरीके से नकली दवाएं इंदौर में हर बड़ी और प्रसिद्ध कंपनियों की करोड़ों रुपये की इंदौर के दवा बाजार से बिक्री और पूरे देश के साथ विदेशों में भी बेची जाती है। बड़ी और प्रतिष्ठित कंपनियों के प्रतिष्ठित ज्यादा लगने वाली या खपत होने वाली सभी दवाओं के पूरे देश भर में सैंकड़ों उत्पादक हैं। यदि कंपनियां प्रतिष्ठित ज्यादा खपने वाली टेबलेट्स, केप्सूल 1 करोड़ बनाती हैं तो 5 करोड़ का उत्पादन देश भर में सैंकड़ों छोटे उत्पादक करते हैं और बड़ी आसानी से सारे करों की चोरी करते हुए स्टाकिस्टों, सी एंड एफ, एजेन्टों, वितरकों और थोक विक्रेताओं के माध्यम से फुटकर विक्रेताओं के यहां पहुंचा कर बिकवा देते हैं। इन सबमें जिसमें इंदौर के दवा बाजार के थोक विक्रेताओं की संदिग्ध भूमिका होती है। साहनी, आशीष, त्रिवेदी, बीडी पटेल, जो उत्पादन विक्रय आदि देखते हैं। अपनी भूमिका के अनुसार वर्षों से वसूली कर चुप हैं।

यही कारण था कि रुस्तम सिंग जैसे भ्रष्ट पुलिसिया मंत्री बनते ही शनिवार 25 जून को इंदौर में पूरे पश्चिमी म.प्र. के मुख्य चिकित्साधिकारियों जिसमें इंदौर, उज्जैन संभागों के तेरह जिलों के सारे प्रभारियों खाद्य एवं औषधि निरीक्षकों आदि को बुलाकर सारी वसूली में शेर का हिस्सा बटोरने और समय पर पहुंचाने के लिये पुलसिया अंदाज में धमका कर निकल लिया दूसरी तरफ पूर्व की महाभ्रष्ट नियंत्रक सलीना सिंग इंडियन एब्यूसिंग सर्विस अधिकारी को पुनः इसीलिये बैठाया गया कि वो भोपाल से निरीक्षण के बहाने निकले और इंदौर पीथमपुर, देवास के औषधि निर्माताओं, थोक विक्रेताओं से निरीक्षण के नाम चमका धमका कर नोंचा-खसोट कर निकल ले। सूत्रों के अनुसार सलीना सिंग हैसियत के हिसाब से बड़े निर्माताओं से लाखों में वसूली करती है और लौटते समय यदि गाड़ी पर छापा मार दिया जाये तो करोड़ों से ज्यादा रुपये उसकी गाड़ी से पकड़े जा सकते हैं। स्वाभाविक है साहनी जैसे भ्रष्टों की फौज यहां वर्षों से कुंडली मारे बैठे हैं तो मात्र 1 करोड़ रु. से ज्यादा वसूली कर रु. 10 लाख तक म.प्र. के औषधि नियंत्रक और स्वास्थ्य मंत्री तक पहुंचाते हैं। अगले अंकों में पढ़िये इन हरामखोरों के कारनामे.......

वाणिज्य कर में भ्रष्टाचार

दो महाभ्रष्ट सहा. आयुक्त आपसी स्थानांतरण लेंगे

आर.के. तिवारी पड़ोस में देवास और सुनील मिश्रा इंदौर आयेगा पर तिवारी का स्थानांतरण उज्जैन, मिश्रा इंदौर के आदेश हुए

आर.के. तिवारी पड़ोस में देवास और सुनील मिश्रा इंदौर आयेगा वा. कर.अ. सुनील मिश्रा जब इंदौर में था तो भारी भ्रष्टाचार से करोड़ों की संपत्ति एकत्रित की। फर्जी वाणिज्य कर पंजीयन, छूटें, व्यापारियों से धन लेकर उल्टे-सीधे कर निर्धारण, अवैध वसूलियां, कानूनों का तोड़-मरोड़कर न्यूनतम वाणिज्य कर वसूली कर अंतर की राशि का 40% तक स्वयं डकार गया। वही हाल यह भ्रष्ट निकृष्ट श्वान देवास में भी कर रहा है। पूरा वाणिज्य कर विभाग चपरासी से लेकर आयुक्त सचिव और मंत्री तक चाहे वह भाजपा का हो या कांग्रेस का सभी को धन चाहिये इसलिये पूर्व में इसके भारी भ्रष्टाचार और शिकायतों, विभागीय जांच के लंबित होते हुए भी रु. 20 लाख देकर यह सहायक आयुक्त बन गया। जबकि टी.के. वेद पदोन्नति की सूची में इससे ऊपर था। पर इसकी रकम मोटी थी इसलिये उसे पीछे क इसे सहा. आयुक्त बना दिया गया। विभागीय पदोन्नति समिति भी धन लेकर ही पदोन्नति करती है अर्थात जो जितना बड़ा भ्रष्ट उसे उतनी जल्दी पदोन्नति अभी इसे इंदौर से गये तीन वर्ष पूरे भी नहीं हुये ये वाफिस इंदौर आने के लिये तैयार बैठा है।

इंदौर। भ्रष्टों की फौज जो वाणिज्य कर के मुख्यालय में वर्षों से बैठी है चूंकि वाणिज्य और उद्योग मंत्री कैलाश चावला महाभ्रष्ट है तो फिर सचिव वाणिज्य कर आयुक्त पी.के. दास को डरने की क्या जरूरत है। यहां बैठी पूरी फौज मोटी चमड़ी के शूकरीय प्रवृत्ति के अधिकारियों की है। जो येन-केन-प्रकारेण कानूनों को तोड़-मरोड़कर व्यापारियों को लाभ पहुंचाकर देय कर के कुल हिस्से का 50% तक डकार जाते हैं। स्वाभाकि यदि एक अधिकारी ने 2

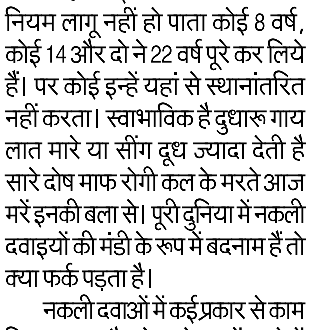

स.आ.मिश्रा का चितावत रोड़ स्थित मकान

करोड़ की कर चोरी करवायी तो उसका एक करोड़ रु. उसकी जेब में ही जायेगी। अब ऐसे भ्रष्टाचार से एकत्रित धन को सेवानिवृत्ति होने तक घर में नहीं सड़ाया जा सकता तो पहला विनियोजन मकान होता है जिसमें आसानी से रु. 1 करोड़ तक लगाया जा सकता है क्योंकि मकान में सोने की ईंटे भी लगवा दो तो भी कम है। सहायक आयुक्त आर.के. तिवारी के संपत्ति विनियोजन जिसमें दो-दो मकान खेती की जमीनें आदि। वाणिज्य करायुक्त पी.के. दास को इस संबंध में पत्र दिये गये थे। स्वाभाविक था एक महाभ्रष्ट दूसरे महाभ्रष्ट को बचायेगा वो पत्र भी लिये गये।

ऐसे ही सुनील मिश्रा जब इंदौर के वृत्त 1 में था, इसने भी भारी भ्रष्टाचार किये जिसमें बोगस कर पंजीयन से लेकर, बिना बिलों के माल पर वसूली, अवैध छूटें व हजारों में उल्टे सीधे कार्यों से धन कमाया गया, मकान बनाया चितावद रोड पर परन्तु नाम पट्टिका अपने पिता जो सेवानिवृत्त हैं कि लगाई। अपने अवैध कृत्यों को बाबुओं से बचाने के लिये दुबे जो कर निरीक्षक था को अपना वाचक नियुक्त कर लिया फिर खुल कर अवैध कामों और वसूली को अंजाम दिया फिर जो भी कार्यालय कर्मचारी भारी पड़ा उनकी गोपनीय चरित्रावलियां बिगाड़ी गयीं पदोन्नतियां रोकी गईं जब तक इसकी शिकायतें ऊपर पहुंची बंदे ने रु. 20 लाख विभागीय पदोन्नति समिति के सामने पटक कर सहायक आयुक्त बन गया। वर्तमान में देवास की फैक्ट्रियों में भी ऐसे ही कानूनों की गलत व्याख्या कर अवैधानिक रूप से देय कर में छूटें देकर वसूली की जा रही है। वहां भी सहायक वाणिज्य कराधिकारी व्ही.के. जैन को जो सीधा-सादा था अपना वाचक नियुक्त कर लिया है। ताकि अपनी जालसाजियों, अवैध वसूलियों और कर चोरी में पकड़े जाने पर उसे फंसाया जा सके।

सहायक करायुक्त आर.के. तिवारी को इंदौर में कार्य करते हुए 3 वर्ष से ज्यादा हो चुके हैं और स्थानांतरण होना है परन्तु ज्यादा दूर न जाना पड़े और इंदौर में खड़ी करोड़ों की संपत्ति की देखरेख भी हो जाये इसलिये देवास जो मात्र 35 कि.मी. दूर है और आधा घंटा लगता है आने या जाने में, दूसरी तरफ इसे इंदौर से गये अभी तीन वर्ष नहीं हुये हैं। सूत्रों के अनुसार रु. 20 लाख खर्च कर आपसी समझौते अंतर्गत वो इंदौर आ जायेगा और ये देवास चला जायेगा। निःसंदेह समय माया कि पिछले अंकों में छपी जानकारियां मानसिक और विभागीय परेशानियां खड़ी कर रही है इससे बचने के लिये स्थानांतरण ले लेना ही बेहतर समझते हैं।

(पृष्ठ 2 का शेष) समय माया ने भ्रष्टों के विरुद्ध अपनी न तो कलम को बिकने दिया है न अभावों के सामने घुटने टेके हैं। जनता के हित में हमने सदा से ही पूरे प्रयास किये हैं, ताकि उसे अनावश्यक भ्रष्टाचार से परेशान न होना पड़े।

पूर्व आरटीओ अहिरवार को एक अजमेरा जी के मोटर सायकल पंजीयन हेतु सारे कागजात दिये थे 5 दिस. 04 को अहिरवार से पूछा गया मालूम पड़ा कागज प्राप्त हो तुके है। 15-16 दिसंबर को पूछा हां करवा देंगे। करते-करते फरवरी 05 हो गयी मालूम पड़ा पेपर्स गुम कर दिये गये हैं। इसी बीच एचडीएफसी के एजेन्ट ग्लोबल फाइनेंस से फोन आता है कि आपके वाहन की किश्त नहीं आयी है जब श्री अजमेरा को झटका लगा। जब वाहन खरीदने हेतु सन 2000 से अनेकों वित्तीय संस्थाओं में चक्कर लगायें तब ऋण दिया नहीं जब गाड़ी अपने पैसों से खरीद ली तो उस पर ऋण ले लिया गया और अजमेरा को खबर भी नहीं हुई। इस संबंध में अहिरवार से पूछा गया तो बोले कागज कनोड़िया को दे दिये थे। कनोड़िया से पूछा बिरथरे को दे दिये थे बिरथरे से पूछा तो उसके खून में चंबल जोर मारने लगी। बदतमीजी पर उतरा तभी मार्च में ये कहना पड़ा कि अहिरवार और बिरथरे दोनों ने काफी समय इंदौर में गुजार लिया अब जाना चाहिये। दो का स्थानांतरण हुआ।

जब-जब आरटीओ कार्यालय गये जनता व एजेन्टों ने बताया कि पूरा स्टाफ बिना पैसे लिये दिये कोई काम ही नहीं करना चाहता। उसके बाद मई के अंतिम सप्ताह फिर मुहिम चलाई तो दूसरे एआरटीओ चुरिहार और 13 अन्य के स्थानांतरण भी हो गये। दो महा मक्कार एआरटीओ कनोड़िया और दूसरा एसएल वर्मा जो महाभ्रष्ट और महालुटेरे हैं अभी भी इंदौर में जमे हैं। जनता से इनसे काफी त्रस्त है इन्हें जाना चाहिये।

वियाग्रा-जो 7 वर्ष पहले लिखा था-

उत्तप्रेरक से उत्तेजना शरीर को कमजोर करेगी

वर्ष 1997 में वियाग्रा बाजार में आई तो ये छोटी से हरी गोली यूरोप के बाजार में कमात्तेजक के रूप में बाजार में छा गई जिसकी पूरे विश्व में काला बाजारी हुई, फाइजर ने अरबों डालर का व्यवसाय पूरे विश्व में किया।

अप्रैल 1998 के अंक में समय माया ने इस विदेशी रासायनिक वियाग्रा पर जो टिप्पणी की थी भले ही उस टिप्पणी पर कोई ध्यान नहीं दिया गया हो पर जो लिखा था कि यह रसायन मस्तिष्क की नसों को उत्तेजित कर कामोत्तेजना देकर शरीर को दीर्घकाल में निस्तेज कर देगा, वह अक्षरशःसही सिद्ध हुआ।

अमेरिका में वियाग्रा लेने वाले पुरुषों ने कुछ वर्षों बाद ही आंखों की कमजोरी से दृष्टि कमजोर होने और शरीर में कमजोरी की शिकायत करना शुरू कर दी। हाल ही में अमेरिका के खाद्य एवं औषधि विभाग ने बढ़ती शिकायतों को दृष्टिगत रखते हुए फाइजर कंपनी को निर्देशित किया है कि औषधि के साइड इफेक्ट्स की पूरी विस्तृत जानकारी को दवाओं के लेवल पर छापा जाये।

वियाग्रा के रसायन से मस्तिष्क में कामोत्तेजना बढ़ने से वह शरीर के रक्त संचरण को लिंग की तरफ धकेल कर उसको उत्तेजित कर तनाव भर देता है। स्वाभारिक था शरीर को पूर्ण रूप से चिकित्सा न कर केवल कामोत्तेजना के लिये उत्तप्रेरक के उपयोग से दूसरी तरफ शरीर में विशेष रूप से मस्तिष्क और उसके आवश्यक अंगों और सोचने की क्षमता और याददाश्त को भी कमजोर करेगा। निःसंदेह वियाग्रा का उपयोग करने वालों को याददाश्त और सोचने की क्षमता आंतरिक रूप से भले ही न समझ आई हो परन्तु दृष्टि और शरीर की औसतन कमजोरी दीर्घकाल में अवश्य समझ में आ गई।

यूनानी और आयुर्वेद के कामोत्तेजना से संबंधी अधिकांश औषधियां शरीर की धातुयें भी पुष्ट करके कामोत्तेजना को उचित मानती हैं। यही कारण कि वे मानव में सहस्त्रों वर्षों से उपयोगी और शरीर को स्वास्थ्य रखने में सफल रही हैं। जबकि ऐलोपैथी सिद्धान्तहीन चिकित्सा पद्धति है जिसका आधार शरीर एक निर्जीव मशीन की तरह है। जिसमें काटापीटी चीराफाड़ी सबसे ज्यादा आवश्यक माना जाता है। इसकी औषधियों के रसायन तात्कालिक उत्तप्रेरक का कार्य कर राहत दे सकते हैं। परन्तु रोग की जड़ में जाकर उससे सदा के लिये मुक्ति नहीं दिला सकते। इसके विपरीत आयुर्वेद यूनानी और 4 शताब्दी पूर्व विकसित होम्योपैथी और बायोकेमिक सैद्धान्तिक रूप से कार्य करने वाली ऐसी चिकित्सा पद्धति है जहां मानव मन में उठने वाली तरंगों और विचारों तक का अध्ययन कर मानसिक और शारीरकि दोषों के कारणों को ध्यान में रख वंशानुगत दोषों व रोगों की चिकित्सा की जाती है।

यही हाल वियाग्रा के साथ हुआ कि जो रसायन पुरुषों के मस्तिष्क को उत्तेजित कर कामोत्तेजना जागृत कर लिंगोत्थान कर तात्कालिक काम सुख भोगने का अवसर प्रदान करते हैं। दूसरी तरफ सीधे अर्थों में शरीर की शक्ति को एकत्रित कर लिंग की शिराओं में रक्त संचरण को बढ़ाकर मस्तिष्क के दूसरे अंगों को निचोड़ रहे थे। जो दीर्घकाल में परिलक्षित हो सामने आने पर कमजोर दृष्टि व शरीर में कमजोरी का अहसास करवाते हैं।

यह सच्चाई यूरोपियन चिकित्सक और एलोपैथिक औषधि निर्माता कंपनियां बहुत अच्छी तरह से जानती हैं। इसलिये उन्हें उन दवाओं के लाभ-हानि के अतिरिक्त उसके संबंधित दुष्प्रभावों को भी लेबल पर छापना पड़ती है।

पीथमपुर औद्योगिक अवशिष्ट निपटान विष का केन्द्र बनेगा

प्रदूषण जन्य मुसीबतों को खुला आमंत्रण

रु. 10 करोड़ का अनुदान डकारने-दीर्घकाल में बजर बनाने की साजिश

बड़े उद्योगपतियों और शासन में बैठे भ्रष्ट आई.ए.एस....... ओर मंत्री, नेता कैसे षड्यंत्र रचते हैं। इसका बड़ा घातक षड्यंत्र है पीथमपुर का अवशिष्ट निपटान केन्द्र पहाड़ी के नीचें ीथमपुर में नीचे बनाया जाना जिसे रामको समूह बनाने जा रहा है। न वहां पर्याप्त 200 हेक्टेयर जमीन है जो अपर्याप्त है साथ ही वहीं पर यूनियन कार्बाइड के वो घातक विषैले रसायन भी जमींदोज किये जायेंगे जिन्होंने विश्व की भयंकरतम त्रासदी को जन्म दिया था।

पहाड़ी के नीचे अवशिष्ट निपटान केन्द्र बनाने से बरसात में पहाड़ी का पानी स्वाभाविक रूप से वहां भरेगा जो पीथमपुर व आसपास के सारे जल स्त्रोतों को खराब कर देगा। पीथमपुर में पूर्व से ही बड़ी-बड़ी सैंकड़ों फैक्ट्रियों के घातक अवशिष्टों से जल और वायु का भारी प्रदूषण फैल रहा है। ब्रिज स्टोन, बजाज टेम्पो लि., आयशर, प्रतिमा सिंटेक्स, पनासोनिक की बैट्री बनाने का कारखाना, राहुल डिटर्जेन्ट हि. मोलमेन, परशराम पुरिया जैसी सैंकड़ों रसायनों, भारी मशीनरी, वस्त्र उद्योग, टायर धातु आदि के घातक रसायन और प्रबंधनों के बाद भी जह और प्रदूषण फैलाकर आदिवासी धार जिले की फिजा बिगाड़ रहे हैं। बस उद्योगपतियों के कहने, लागत कर करने और रु. 10 करोड़ का अनुदान डकारने के लिए कुछ भी बना कर औपचारिकताएं पूरी की जा रही है।

इंदौर। पीथमपुर, देवास, भोपाल के उद्योगों के घातक अवशिष्टों क़ो निपटाने के लिये म.प्र. शासन के मुख्यमंत्री गौर, पर्यावरण और गृह निर्माण मंत्री राजेन्द्र शुक्ल जो पूर्व से ही महाभ्रष्ट, जालसाज हैं ने जबकि हाल ही में इसमें भाजपा में प्रवेश किया था पार्टी में चंदा देकर टिकिट लिया। चंदा देकर मंत्री बना तो मात्र रीवा में अपने खानदान के ठेके के व्यवसाय में भ्रष्टाचार करने, कुकर्मों को दबाने के लिये। स्वाभाविक है ऐसे भ्रष्टों को जनता से नहीं पार्टी के चंदे में दिये धन को वसूलने भ्रष्टाचार करने से मतलब है।

अवशिष्ट निपटान केन्द्र के निर्माण में केन्द्र व राज्य शासन को रु. 10 करोड़ का अनुदान मिलेगा दूसरा पीथमपुर के बड़े उद्योगों को अवशिष्ट निपटाने में जो लागत बढ़ रही है उसे कम करने के लिये पीथमपुर की पहाड़ी के पास ही निपटान केन्द्र बनाने की तैयारी की जा रही है। पीथमपुर औद्योगिकेत्र बनने के पहले काली मिट्टी वाला अच्छा कृषि क्षेत्र रहा है। वर्तमान में चारों तरफ खरीफ और रबी की फसलें ही जा रही हैं। जहां खाद्यान्नों, तिलहन, सब्जियां उगाई जाती है। जहां तक अवशिष्ट निपटान केन्द्र बनाने का सवाल है उसे स्वाभाविक रूप से पथरीली और बंजर जमीन पर बनाया जाना चाहिए जो कृषि अयोग्य हो जहां दूर-दूर तक आबादी न हो और जल स्त्रोतों, नदियों के निकट न हो। ताकि ऐसे अवशिष्टों का असर कृषि, वायु, जनक्षेत्रों, जल स्त्रोतों पर न पड़े अन्यथा पानी रिस-रिस कर जल स्त्रोतों, कृषि और आबादी को दूषित कर भविष्य के लिये घातक लोगा। जबकि पीथमपुर औद्योगिक क्षेत्र होने से पूर्व से ही बड़ी-बड़ी सैंकड़ों फैक्ट्रियां जिसमें ब्रिजस्टोन, बजाज टेम्पो, हिन्दुस्तान मोटर्स, आयशर, मेटलमेन, परशराम पुरिया, प्रतिभा सिंटेक्स, निरमा केमिकल्स, राहुल डिटर्जेन्ट प्रा. लि., लखनपाल निप्पो जल और वायु में अपने अवशिष्टों से दूषित से दूषित कर रही है। ऐसी सैंकड़ों फैक्ट्रियों पर प्रदूषण मंडल के भ्रष्ट एक तो कार्यवाही वसूली करने के कारण करते ही नहीं, फिर भी यदि आवश्यकता पड़ भी जाताहै तो बड़े उद्योगपति दिल्ली भोपाल में बैठे भ्रष्ट आई.ए.एस. लॉबी, के और मंत्रियों पर गुर्रा कर और टुकड़ा डाल कर मामले को ठंडा कर देते हैं। ऊपर से अवशिष्ट निपटान केन्द्र बनाने के बाद उसमें भोपाल, इंदौर और उज्जैन संभाग की फैक्ट्रियों, उद्योगों के घातक रसायन, अवशिष्ट यहां तक कि उसमें यूनियन कार्बाइड की बंद पड़ी फैक्ट्री के टनों से विषैले रसायनों को जिन्होंने हजारों व्यक्तियों को मौत की नींद सुला दिया खुले में डाले जाने पर क्या रासायनिक प्रतिक्रिया नहीं करेंगे, रहां सब कुछ संभव है सभी फैक्ट्रियों से निकले रासायनिक अवशिष्टों में रासायनिक प्रतिक्रियाओं से विस्फोट होने से लेकर प्राकृतिक जल स्त्रोतों और प्राकृतिक पर्यावरणीय वायु को प्रदूषित कर वहां की ओर धीरे-धीरे 10-20 वर्ष में सैंकड़ों वर्ग कि.मी. भूमि प्रदूषित होगी। पहाड़ी से बहने वाला जल आजू-बाजू के नालों पर और भूमिगत जल स्त्रोतों में मिलकर चंबल और नर्मदा जैसी बड़ी नदियों के जल को भी प्रदूषित कर देगा। रासायनिक प्रक्रियाओं में विभिन्न फैक्ट्रियों से निकले अवशिष्टों के मिलने से यूनियन कार्बाइड की 1983 की 2 दिस. वाली भोपाल की भीषण त्रासदी वहां भी घट सकती है जो प्रत्यक्ष संभवावित है। अप्रत्यक्ष भविष्य में क्या लक्षण प्रगट होंगे यह भविष्य बतायेगा।

सूत्रों के अनुसार पहाड़ी के नीचे जिस स्थान पर अवशिष्ट निपटान केन्द्र बनाया जा रहा है वहां भूमि की उपलब्धता लगभग 20 एकड़ है। जबकि सूत्रों के अनुसार अवशिष्ट निपटान केन्द्र के लिये 60 एकड़ भूमि चाहिये। दूसरा जितनी भी जमीन खरीद पाये हैं उसमें चारों तरफ बाउंड्री वाल बना कर किसी भ्रष्ट मंत्री संत्री से उद्घाटन का पत्थर लगवा कर दरवाजा लगवा दिया जायेगा। इसके बाद रामको समूह के भ्रष्ट, राजेन्द्र शुक्ला मंत्री प्रदूषण मंडल का अध्यक्ष पी.एस. दुबे, स्थानीय पीथमपुर का क्षेत्रीय प्रबंधक जो इंदौर में बैठता है वहां गड्ढे खुदवा कर आधा अधूरा बिना अंतर्राष्ट्रीय डिजाइन जो कि विदेशों में ऐसे केन्द्रों को बनाने के मापदंडों में प्रयुक्त की जाती है। निःसंदेह नक्शे, स्वीकृतियां कागजों पर सब कुछ वैसा ही होगा, परन्तु जमीन पर वैसा कुछ भी नहीं होगा, बड़े-बड़े गड्ढे खोदकर समय पूरा किया जायेगा और मामले को लंबा खींचकर आधा अधूरा छोड़कर प्रमाण पत्र पूरा होने का लेकर भुगतान और रु. 10 करोड़ का अनुदान डकार कर और बंदर बांट कर कंपनी तो पिछाड़ हाथ पोंछ कर चल देगी भुगतान करना होगा तो वहां के कृषकों को वहां की फैक्ट्रियों में काम करने वाले कर्मचारियों और चारों तरफ बसे ग्रामीणों को जिनकी चीख-पुकार कभी भोपाल और दिल्ली नहीं पहुंच सकेगी।

6 महीने साल भर बाद वहां सारी फैक्ट्रियों के पीथमपुर के, देवास, रतलाम, नागदा के साथ ही यूनियन कार्बाइड के रसायन, भोपाल मंडीदीप की फैक्ट्रियों के रसायन वहां लाकर एक बार डलना शुरू हुए तो कौन पलटकर देखेगा कि उसकी डिजाइन कैसी थी। या वहां पहाड़ी का बहकर आने वाला व उसी अवशिष्ट निपटान केन्द्र पर बरसने वाले जल जो धरती में समा रहा है उसका क्या अंजाम सामने आयेंगे या आ रहे हैं। 1000-2000 मवेशी और 100-200 ग्रामीणों की अकाल मृत्यु के बाद ग्रामीण जागेंगे शासन के व प्रदूषण मंडल के भ्रष्टों को चूंकि फैक्ट्रियों से मिलने वाला धन मुंह कान और आंखें बंद कर देगा तो जब तक 2000-5000 ग्रामीण अकाल मृत्यु नहीं भरेंगे फिर स्थानीय नेता अपनी नेतागिरी चमकाने के लिये रास्ते रोको, विधानसभा के सामने आंदोलन प्रदर्शन नहीं करेंगे कुछ नहीं होगा।

जैसा कि वर्तमान में सांवेर रोड, पोलोग्राउंड में कार्यरत बड़ी छोटी औधषि, रसायन, कपड़ा उद्योग रंगों, रसायनों का उपयोग करने, उत्पादन करने वाले लगभग 500 से ज्यादा फैक्ट्रियां जिनका प्रदूषित जल रसायन नाले में से बहकर एम आर टेन के रेल्वे क्रासिंग के पास बने पुल में से बहकर 15 कि.मी. दूर मांग्या जारण्या जैसे लगभग 20 गांवों की आबादी को खुजली की बीमारी बांट रहे हैं। हर वर्ष ऐसी बीमारियों सेग्रस्त हर उम्र के लोग मर रहे हैं। उज्जैन इंदौर रोड सांवेर रोड औद्योगिक क्षेत्र के जल स्त्रोतों, बोरिंग में से निकलने वाला पानी पीते ही उल्टी दस्त की शिकायतें शुरू हो जाती हैं। पर सारे प्रदूषण मंडल के भ्रष्ट नमूने लेने वाला प्रयोगशाला कर रसायनज्ञ, क्षेत्रीय अधिकारी वसूली कर मुंह दबा कर निकल लेते हैं। कन्हैयालाल यादव ने वहान पर स्थानीय चैनल वालों को बुलाकर सच्चाई दिखा दी है परन्तु सब चुप हैं। वही हाल शीघ्र ही पीथमपुर का हो जायेगा।

म.प्र. विद्युत मंडल भ्रष्ट कितनावत के समाचारों के परिणाम स्वरुप

भरत आदिवासी हॉकर को लात दिखाई पेपर छीने

म.प्र. विद्युत मंडल के भ्रष्टाचार को लगातार छापने से वहां का अभिपंता कितनावत कितना और कहां गया कि जून 23 की शाम 2 से 2.30 बजे के बीच जब हमारा हॉकर भरत गामड़ म.प्र. विद्युत मंडल के परिसर में समय माया समाचार पत्र बांट रहा था तो कितनावत ने उसे बुलवाकर लगभग 200 प्रतियां छीनकर लात दिखाई।

आखिर भ्रष्ट अपने कुकर्मो को पड़कर कितना बौखलाया और भी अपनी जो कर्मचारियों को मारपीट गाली-गलौज की सत्याता को अशरशः सिद्ध करते हुए उसे लात दिखाई। यह सिद्ध करता है कि कितना वत कितना नीच बातामीज और भ्रष्ट है। इसके उपरांत भी वह इंदौर में केवल भ्रष्टाचार और लूटने के बाद लुटाने के दम पर ही बैठा है।

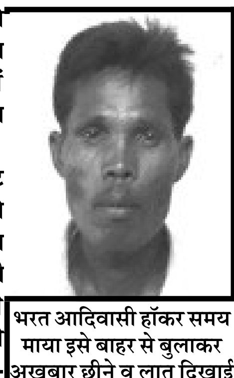

भरत आदिवासी हॉकर समय माया इसे बाहर से बुलाकर अखबार छीने व लात दिखाई

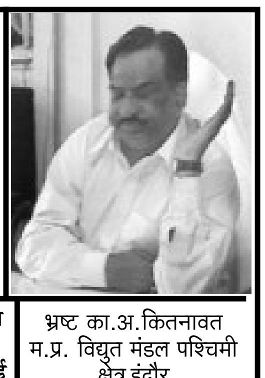

भ्रष्ट का.अ.कितनावत म.प्र. विद्युत मंडल पश्चिमी क्षेत्र इंदौर

क्या छवि बन रही है पूरे मंडल की जनता की निगाहों में बिलों में तो लूट कर ही रहे है। कार्यपाल यंत्री जैसे अधिकारी का यदि ये व्यवहार कर्मचारियों बाहरी व्यक्तियों अखबारों के हॉकरों के साथ ये है तो उपभोक्ताओं के साथ वैद्य-अवैध वसूली में क्या हौता होगा पाठक मंडल के उचधिकारियों को स्वंय सोच लेना चाहिए कि उनका ही एक कार्यपालन यंत्री की लूट पाट की मानसिकता नीचता और बतामीजी पूर्ण व्यवहार जनता पर क्या प्रभाव डालेगा। कितनावत को भिंड, मुरैना, धार, झाबुअ के ग्रामीण क्षेत्रों में पदस्थ कर दिया जाए तो जनता ग्रामीण किसान उपभोक्ता इसको तरीके से सबक सिखा दें।

कितनावत ने गौरी नगर व आसपास के क्षेत्र में भी भारी भष्टाचार से वसूली कर वहां उल्टे सीधे तरीके से खंभे खड़े कर दिए खंभों को खड़े करने में जबकि वहां पहले खबे थे और काली मिट्टी का नरम क्षेत्र है गढ्डे खोदकर सीध खंभे खड़े कर दिए गए जबकि खंभों को खड़ेकर उसमें सीमेंट गिट्टी और बाजरी का उचित अनुपात में मिश्रण भरकर जमाया जाना चाहिए था चूकि कालोनी अवैध थी वहां रु. 1000/- लगभग 800 घरों और रु.10,000/- व्यवसायिक कनेक्शन जिसमें दुकाने घरेलू उद्योग आदि थे उनसे वसूले गए जो लगभग 200 से ज्यादा थे. इस प्रकार वहां करीब रु. 60 लाख से ज्यादा की वसूली में कार्य मात्र रु. 15 से 20 लाख की ही किया गया. इसके कार्य काल के हर क्षेत्र में बारीकी से अध्धयन किया जाए तो कुकर्मों और निम्न श्रेणी के गंदे गलियों मारपीट मंडल के कर्मचारियों के साथ प पूरी किताब लिखी जा सकती है। इसके स्वभाव और बतामीजियों के साथ ही कर्मचारियों की गोपनीय चरिवान भी बिगड़कर भविष्य बर्बाद करने अफने भ्रष्टाचार पूर्ण कुकृत्यों पर कर्मचारियों द्वारा साथ न देने पर उन्हें ज्ञापन देना मंडल में कार्यों को संपन्न करने के लिए दलालों को बढ़ावा देकर अवैध कार्यों से वसूली करने की भी भारी शिकायत हैं। चूंकि कंपनी में प्रबंध संचालक पद पर भ्रष्ट इंडियन ए.यू सिंह सर्विस के अधिकारी जो वास्तविकता में केवल भ्रष्चार, लूट, वसूली और घोटालों के प्रबंधन के विशेसज्ञ होते है। उन्हें इन सब तथ्यों के प्रबंधन से सरोकार नहीं होता इसलिए जब तो ही धन लेकर ऐसे गंदी मानसिकता नीचव्यवहार के भ्रष्ट का स्थानांतरण 8 दिन में ही खंडवा से र- कर इंदौ में बैठा सकते है, तो उनके अधीनस्थ कार्यरत मुख्य कार्यपालन अमियंता श्री गोस्वामी से मंडल के लाखों उपभोक्तओं और सैकड़ो कर्मचारी के हितों और वरिष्टों की छवि के हित में कोी सकरात्मक निर्णय की अपेक्षा शायद व्यर्थ ही होगी।

खाद्य विभाग भ्रष्टों का जमावड़ा

(शेष 4 पृष्ठ का) जिलाधीश सुलेमान ने पंपों पर मिलावट रोकने के लिये टेंकर खाली होते समय खाद्य निरीक्षक या सहायक खाद्य आपूर्ति अधिकारी के सामने होने और सील लगाने की व्यवस्था की थी, परन्तु भाजपा के भूखे भ्रष्ट मंत्रियों को सत्ता में आते ही नोच-खसोट की पड़ गयी। फिर ऊपर से भ्रष्ट कैलाश ने अपने सिंहस्थ के पार को उज्जैन से इंदौर बुलवाया ही इसलिये था कि राजेश राजौरा और कैलाश दोनों ही चारों हाथों से लूट मार कर सके। इसलिये न केवल टैंकर खाली होने से पूर्व पुरानी सील देखकर भरने के बाद नई सील लगाने की व्यवस्था जो की गई थी। वह व्यवस्था तो समाप्त कर ही दी। साथ पेट्रोल पंपों पर लगने वाली पारदर्शी पाइप का मामला भी पेट्रोल पंप मालिकों ने पकड़े जाने और चोरी दिखने के डर से समाप्त करवा दिया।

सभी जिसमें अजीत श्रीवास्तव, पाटन कर नाप तौल निरीक्षक के साथ ही उप संचालक नापतौल को भी वसूली चाहिये ये हर महीने पेट्रोल पंपों से तो स्वाभाविक है वो नाप-तौल में भी खुलकर लूटमार करेंगे। पंप मालिकों और इन भ्रष्ट नापतौल निरीक्षकों, खाद्य निरीक्षकों का ये कहना है कि इलेक्ट्रानिक पंप लग गये हैं। अब लूट नहीं हो सकती। एकदम सफेद झूठ है। पंपों पर मालिक से लेकर हॉकर तक इतने शातिर हैं कि वो आसानी से 10% से लेकर 30% तक पेट्रोल की चोरी कर ही डालते हैं। जिसमें तीव्र गति से नंबर घुमाने से लेकर नाप में ही उसे 10% की सेटिंग मशीनों में करने के साथ ही कम नापने के 5-7 तरीके ऐसे हैं जिनमें हॉकर आसानी से पेट्रोल मार लेते हैं। कुछ पंपों पर जहां लड़कियां खड़ी होने लगी हैं इतनी शातिर होती हैं। वहां चालक की आंखों में आंखें डालकर मुस्करा या गुर्रा कर बात करेंगी आसानी से मीटर में 10 से 25 प्रतिशत पेट्रोल मार दिया जायेगा। चूंकि हॉकरों का वेतन जो कंपनी देती है वो तो पूरी पंप मालिक ही डकार लेता है तो हॉकर पेट्रोल नहीं मारेगा तो खायेगा क्या?

पेट्रोल पंपों से पैसा न केवल खाद्य और नाप तौल वाले खाते हैं वरन उपजिलाधीशों के सचिवों से लेकर मंत्री तक पहुंचता है। तो वर्ष भर में रु. 50 लाख रु. या 10 लाख भी कमाता है तो इन शासकीय श्वानों को भी पहुंचाता है।

यही कारण है कि बड़े खिलाड़ी जो मोटा माल देते हैं सबकी नजरों से दूर रहते हैं। आर-आर कांट्रेक्टर जो पूरे प्रदेश में पिछले 15 से ज्यादा वर्षों से साल्वेंट आपूर्ति का बड़ा अड्डा है और खालशा पेट्रोलियम की तरह वाणिज्य कर की चोरी भी कर रहा है इस गुजराती की गुजरात में मोटी पकड़ है। पिटोल, बेरियर से सैंकड़ों ट्रक निकलकर पूरे महीने म.प्र. के पंपों को साल्वेंट की आपूर्ति करते हैं। झाबुआ के वाणिज्य कर अधिकारी शर्मा का महीना पहुंचाकर शान से बे-रोक-टोक धंधा कर रहे हैं। आखिर वो साल्वेंट मिट्टी का तेल गुजरात से क्यों आता है। जब यहां के 4 डिपो ही मिट्टी का तेल, पेट्रोल, डीजल की आपूर्ति कर रहे हैं। फिर कहां जाते हैं। वो सारे साल्वेंट, नेफ्था, मिट्टी के तेल, फर्नेस आइल के। वो सारा माल इन्दौर, भोपाल, उज्जैन के साथ अन्य स्थानों पर ही खपाया जाता है।

आखिर जनता लुटने के लिये ही पैदा होती है। सब लूट रहे हैं। दिग्गी दानव और बाबू गौर में ज्यादा अंतर नहीं।

म.प्र. लोक निर्माण विभाग भ्रष्टाचार

एक भ्रष्ट के सी जैन गये दूसरे आये

म.प्र. लोक निर्माण विभाग रा.रा. में एक भ्रष्य के.सी. जैन जिनकी समय माया पिछले कई वर्षों से लगातार भ्रष्टाचार के समाचार प्रकाशित कर रहा था जिसके पास करोड़ों की भ्रष्टाचार से अर्जित धन से संपत्ति एकत्रि की थी शासन ने उसकी जांच करने और निलंबित करने की अपेक्षा समय माया के पूर्व के अंकों में रीवा स्थानांतरित करने के लिये लिखा गया था। निलंबन की अपेक्षा उसे रीवा स्थानांतरित कर दिया है। दूसरे भ्रष्ट के.सी. जैन जो खंडवा में पदस्थ था यहां के संभाग दो बी एंड आर में पदस्थ किया गया है। जिनका पुत्र मनीष जैन इन्हीं के दम पर लोक निर्माण विभाग में ठेकेदारी करता है। विभागीय इंजीनियर्स अस्तरीय कार्य के बाद भी बिलों का भुगतान करते हैं। अब बापू के यहां के कार्यपालन अभियंता बन जाने से बाप-बेटे को ब्रष्टाचार सिर चढ़कर उल्टे-सीधे काम भी करेगा और पूरा पैसा भी डकारेगा। देखिये आगे होता है क्या?

साप्ताहिक
समय माया

टीवी कार्यक्रम परोस रहे बदतमीजियां, हिंसा, यौनाचार

एकता कपूर भावी पीढ़ी को बर्बाद करने पर क्यों तुली हैं

वर्तमान में टीवी की विभिन्न शृंखलाओं पर परोसे जाने वाले अधिकांश पारिवारिक कार्यक्रम जो अधिकतर एकता कपूर के मार्गदर्शन में बन रहे हैं। सिवाय नग्नता, उच्श्रृंखलता, चरित्रहीनता, हिंसा, अपराध, अवैध यौनाचार परोसकर राष्ट्र के पारंपरिक संस्कृति और चरित्र को विकृत बनाकर पूरे विश्व में आपराधिक छवि प्रस्तुत कर रहे हैं। ठीक है इसका असर प्रौढ़ वर्तमान पीढ़ी पर नहीं होगा, परन्तु 5 से 20 वर्ष के बच्चे और युवाओं के मस्तिष्क पर न केवल अपने माता-पिता की छवि बिगाड़ने, उच्श्रृंखलता, यौनाचार, नग्नता, हिंसा, अपराध तो सिखा ही रहे हैं। साथ ही भारत की आत्मा के रूप में विद्यमान पारिवारिक आस्था सम्मान और विश्वास को नष्ट करने पर तुले हैं। जिसके घातक परिणाम गाहे बगाहे देश में देखने को मिल रहे हैं। यौनाचार संबंधी अपराधों का प्रतिशित बढ़कर समग्र भारत का आंकड़ा 50% तक हो गया है।

वर्तमान में राष्ट्रीय स्तर की दूरदर्शनी शृंखलायें जिसमं स्टार, सोनी, जीटीवी अपनी विभिन्न मनोरंजन शृंखलाओं से मनोरंजन और पारिवारिक कार्यक्रमों के नाम पर निहायत बदतमीजियां, नग्मता, यौनाचार, अपराध, जालसाजियां, हत्यायें परोसने के साथ ही नागरिकों के अपने विज्ञापन बेचने के नाम पर बे-सिर-पैर के कार्यक्रमों से जीवन के करोड़ों घंटे भी बर्बाद कर रहे हैं।

कहानी किस्मत की, क्योंकि सास भी कभी बहू थी, कहानी घर-

घर की, कसौटी ऐसे अधिकांश कार्यक्रम जिन्हें एकता कपूर ने बनाया है परोसे जा रहे हैं।

एकता कपूर की पारिवारिक पृष्ठभूमि में बाप जितेन्द्र के संबंध विभिन्न फिल्मी वेश्याओं से भाई तुषार कपूर के संबंध भी इसी प्रकार फिल्मी वेश्याओं से रहते आये हैं। वह खुद चूंकि मेट्रोसिटी मुंबई के माहौल में पली-बढ़ी हुई है जहां यौनाचार का संबंध परिवार से कम धन, शक्ति संपन्नता भविष्य और महत्वाकांक्षाओं से ज्यादा होता है कि आने वाले कल में किसका कहां कैसा उपयोग किया जा सकेगा। यदि उपयोगी है तो यौनाचार करने में वहां स्त्रियां

शीघ्रता से जो जहां मिले निपटाओ और धन, शक्ति और भविष्य की नींव पुख्ता करो। वहां चरित्रहीनता अभिशाप नहीं वरन अजेय अपराजित एक ऐसा हथियार के रूप में उपयोग किया जाता है। चूक जो नहीं करता वही एकता कपूर कर रही है। धन ऐश्वर्य पूर्ण जीवन की वर्तमान की आधारभूत आवश्यकता है उसे हथियाने के लिये वस्त्रहीन होना और करना प्राकृतिक साधनों का सफलतम सदुपयोग है। फिर नारी का कोमलांगी चरित्र ही पुरुष को निपटाने, निचोड़ने और बैल बनाकर उपयोग करने का साधन है। तो अपने पुत्र के साथ छल, कपट करने से नहीं चूकती तो फिर पति, पिता और अन्य पुरुषों की तो औकात ही क्या?

एकता कपूर नारी के कोमलांगी स्वरूप को हथियार और ढाल बनाकर भारतीय नारी को परिवार के परंपरागत दायित्व और प्राकृतिक स्वरूप को त्याग कर जो इस देश की संस्कृति की आत्मा थी को नष्ट कर पुरुष को खिलौना बनाकर अपनी महलाकांक्षाओं को पूरा करने चरित्रहीन बनाने पर तुली हुई है। इसका असर अधेड़ पीढ़ी पर पड़े न पड़े परन्तु यौवन की दहलीज पर खड़ी ग्रामीण, शहरीय और महानगरीय संस्कृति में पली बढ़ी नारियों पर जरूर पड़ रहा है क्योंकि यह पीढ़ी बचपन से यौवन की दहलीज पर पहुंचते पहुंचते दूरदर्शनी शृंखलाओं के कार्यक्रमों को घर में बैठकर आत्मसात करती रही है।

परिणामस्वरूप वर्तमान में महाविद्यालयीन लड़कियों के मस्तिष्क में पुरुष को भोगने उसे जेब से शरीर से निचोड़ने पर लगी है। उसे वस्त्रहीन होने किसी के भी साथ पैसे के लिये यौनाचार करने में चरित्रहीनता को अपनी महानता सिद्ध कर रही है। अब 70% शादी, शब्द ही अर्थहीन हो गया है। वो अपने ऐशो आराम और शानो-शौकत के लिये खुले में वेश्यावृत्ति कर रही है। जिसे समाज भी स्वीकार कर रहा है। बहाना होता है पढ़ाई, जिसके लिये वो सहेलियों से मिलने जाने, स्कूल, कालेज प्रशिक्षण केन्द्रों पर जाने के बहाने, घर से निकलती हैं। छात्रावासों में पढ़ने वाली लड़कियों का तो हाल और भी बुरा है। खुले में मेडिकल, इंजीनियरिंग प्रबंधन, कम्प्यूटर्स कोर्सेस तक के कालेजों के छात्रावासों में खुलकर दलालों के माध्यम से लड़कियां इस धंधे में गहरे तक धंसी हैं।

एकता कपूर के अधिकांश पारिवारिक कार्यक्रमों में पति, प्रेमियों, चार-पांच शादियां, पत्नी द्वारा पति की प्रेमी के साथ मिलकर

हत्या, फिर प्रेमी की प्लास्टिक सर्जरी, पुत्र की हत्या, बेटी को दांव पर लगाना उसके प्रेमियों से माताओं के संबंध और उपयोग किया जाना जैसे भारतीय का यही चरित्र रह गया हो। जाकर पूछो किसी तलाकशुदा महिला पुरुष से उसकी वास्तविक जिंदगी। यूरोपीय राष्ट्रों में तलाक और परिवार टूटने की त्रासदियां वहां के बच्चे भुगतते हैं। वास्तविक जिंदगी इतनी आसान नहीं होती कि चलते रास्ते किसी की भी हत्या कर दी जाये। धन के लिये पत्नी ही प्रेमी के माध्यम से पति की हत्या करवा दे। 10,000-20,000 में एक दो ऐसे प्रकरण होते हैं। फिर पुलिस और कानून की तो कोई भूमिका कहीं भी नहीं होती। फिर पुलिस और कानूनों की नजरों से यदि व्यक्ति बच भी जाये तो प्रकृति अपना न्याय भी तो करती है जिसकी मार समझ में भी नहीं आती, परन्तु झेलनी तो अवश्य पड़ती है।

ऐसे दिशाहीन कार्यक्रम आखिर समाज को क्या देंगे। एकता कपूर तो खानदानी, जालसाज, कर्मचारियों, कलाकारों का शोषण करने वाली और अय्याश है। तो उसे सारे लोग वैसे ही दिखते हैं।

युवा पीढ़ी को चाहिये कि ऐसे कार्यक्रमों से भ्रमित न हो और वास्तविक जिंदगी में प्रेरणा मानकर न चलें। वास्तविक जिंदगी में कदम-कदम पर समायोजन स्वीकार करने पड़ते हैं। जीवन के निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में भारी पापड़ बेलने पड़ते हैं। निःसंदेह यौनाचार जीवन का आधार है पर जीवन तो नहीं और हथियार भी नहीं जिससे दुनिया को हांका जा सके।

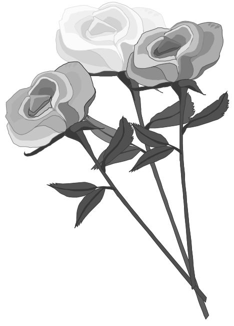

विश्व हित में
निर्भीक भविष्य हितकारी
पत्रकारिता के लिए
समयमाया परिवार को
शुभकामनाए

शुभचिंतक

भ्रष्टाचार के धन से फिल्म

पूर्व में पाठकों ने आर.के. सोनी सहा. ायुक्त खंडवा जिसके पास यहां करोड़ों की संपत्ति है, के पास करोड़ों रुपये जो एकत्रित किये थे से धन फिल्मों में भी लगाया स्वाभाविक है रु. 5 करोड़ से ज्यादा धन जो लगाया वो अवैध वसूली का ही था। सिकी निर्मात्री पत्नी को बनाकर नाम डाला गया है प्रीति सोनी और लेखक के रूप में स्वयं आर.के. सोनी लिखा है। विज्ञापन में सहा. आयुक्त वाणिज्य कर खंडवा नहीं है। अन्यथा खंडवा, इंदौर के व्यापारी फिल्म देखने अवश्य जाते या जिन व्यापारियों ने देय कर की चोरी कर मोटी रिश्वतें दी हैं उन्हें शायद मुफ्त टिकिट दिया जाये कुसुम टाकीज का। भ्रष्टाचार के अंधत्व से पीड़ित आयुक्त को नहीं दिखेगा ये सब कि आखिर इतना धन कहां से आया कि फिल्म निर्माण की सूझ गई।

भाजपा का भोज पत्रकारों को

भोपाल। शनि. 2 जुलाई को भाजपा कार्यालय में सत्तारूढ़ दल ने अगरे 6 माहों की पार्टी की रणनीति बताने और पत्रकारों को भोजन करवा कर असली घी के दाल बाफले जो कि भाजपा की नवयौवना सदस्यों द्वारा परोसा गया था खिलाने के पीछे की राजनीति के पीछे था कि ज्यादा मत उघाड़ो। उस दिन लालकृष्ण आडवाणी, अरुण जेटली जैसे नेता भोपाल में थे, परन्तु बाबूलाल गौर उनसे दूर पत्रकारों को इस अपेक्षा से भोजन करवा रहे थे कि पत्रकार खुश तो सब खुश, सभा के समापन पर अरुण जेटली ने अपना भाषण पिलाया।

सभी जानते हैं कि भ्रष्ट अफसरशाही के चलते फिर स्वयं भी भ्रष्टाचार में लिप्त रहने के कारण उनटी ढींगे, वादे सब बकवास ही सिद्ध हुए हैं। जो भ्रष्ट अधिकारियों को स्थानांतरित नहीं कर पा रहे हैं वो और उनके मंत्री, सब धन लेकर चुप हो जाते हैं।

कुछ पत्रकारों ने मुख्यमंत्री गौर से कुछ भ्रष्ट मंत्रियों के बारे में पूछा तो गौर ने ऐसे प्रश्नों के जवाब टाल दिये।

कुछ ने कहा कि आपने तो भ्रष्ट अधिकारियों पर लगाम कसने और दंडित करने की अपेक्षा उल्टे ही उन्हें दोषमुक्त करार दे दिया तो कैसे भ्रष्टाचार मिटायेगी और भ्रष्टों को दंडित कर भ्रष्ट अधिकारियों को सीख देगी। स्वाभाविक था ऐसे मु-ों को हंसकर टालना।

भोज के बाद छोटे पत्रकारों को खाली हाथ बिदा कर दिया गया। इसके विपरीत जैसा कि राजधानी में चलन है कि दूरदर्शनी शृंखलाओं के पत्रकारों, कैमरामेनों, बड़े समाचार पत्रों के प्रतिनिधियों को शाम को मोटे लिफाफे घर पहुंचाना ताकि वो ज्यादा सरकार और प्रशासन की छिछालेदर न करें पहुंचाये गये ही होंगे।

भाजपा मुख्यमंत्री गौर का भाजपा कार्यालय में दिया गया यह भोज भी भ्रष्ट भोज था कि इसके साथ हमारे भ्रष्टाचार को निगलो (और मत छापो हमारे विरुद्ध)

प्रतिबंधात्मक सूचना

इस समाचार पत्र एवं वेबसाइट में प्रकाशित समाचार सामग्री का पूर्ण-अपूर्ण या उसके आधार पर बनाये गये अन्य समाचार, टीवी समाचारों, टीवी एपिसोड, इंटरनेट साइटों पर नगर, प्रदेश व राष्ट्र या राष्ट्र के बाहर विश्व में किसी समाचार पत्र पत्रिका, टीवी समाचारों, डाक्यूमेंट्री या धारावाहिकों में बिना लिखित आदेश व अनुमति के उपयोग न करें. अन्यथा कॉपी राइट एक्ट के अंतर्गत इन्दौर न्यायालय में क्षतिपूर्ति एवं कानूनी कार्यवाही की जा सकती है.

इस समाचार पत्र की प्रतियां लेकर कुछ जालसाज ढोंगी पत्रकार होने का ढोंग कर पैसे, चंदा, सम्मेलनों के नाम पर धन वसूली करने की शिकायतें मिल रही हैं. ऐसी किसी भी अवस्था में आप सीधे मोबाइल पर चर्चा कर स्थिति स्पष्ट कर सकते हैं. अन्यथा सीधी पुलिस और कानूनी कार्यवाही करने के लिये स्वतंत्र हैं.

आज्ञा से
प्रधान संपादक

स्वामित्वाधिकारी, प्रधान संपादक एवं प्रकाशक अजमेरा एस.पी. कुमार के लिए मीडिया वर्ल्ड कम्यु. 299-अंबेडकर नगर, इन्दौर के लिए नवनीत प्रिंटर्स जेल रोड, इन्दौर द्वारा मुद्रित.
कम्प्यूटराईजेशन एवं ग्राफिक्स नीरज रोजिया भोपाल प्रतिनिधि मो.नावेद खान मो.98262-25266,फोन-2583335 जबलपुर प्रतिनिधि श्री भारतभूषण शर्मा फोन-9425387974 , जबलपुर, इन्दौर फोन-2102725, कार्या. फोन फेक्स-2531630 मो. 9300755803